"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૬૨

ગીરનાર ગલ્પ

: દ્રવ્ય સહાયક :

શાસન સમ્રાટ પૂ. આ. શ્રી નેમીસૂરીશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના
પૂજ્ય સાધ્વી શ્રી દક્ષયશાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી
શા. ગજીબેન પોપટલાલ મગનલાલ શ્રાવિકા ઉપાશ્રયની
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી,
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रमांक	पुस्तकनुं नाम	कर्त्ता-टीकाकार-संपादक	पृष्ठ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્ત્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची । *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं ।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

श्री न्यायाम्भोनिधि-श्रीमद्विजयानन्दसूरिभ्योनमः ॥

ग्रंथमाला. नं. १६

॥ अर्हम् ॥

॥ गिरनार गल्प ॥

प्रेरक—

शान्तमूर्त्ति मुनिमहाराज १०८ श्री

हंस विजयजी महाराज.

योजक—

जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि शिष्य-मुनि

महाराज श्री लक्ष्मी विजयजी शिष्य—

मुनिमहाराज श्री हर्ष विजयजी शिष्य—

मुनिमहाराज श्री वल्लभविजयजी

शिष्य—पंन्यास—

श्री ललित विजयजी ॥

प्रकाशक—

श्री हंसविजयजी फ्री जैन लायब्रेरी

श्रीवीर निर्वाण २४४८ श्री आत्म संवत् २६

विक्रम संवत् १९७८ इसवीसन १९२१

मूल्य आठ आना.

अमदावाद—श्री अंबीकाविजय प्रिन्टींग प्रेसमां
पटेल लक्ष्मीचंद हीराचंदे टाइटल छाप्युं.
चोपडी जैनविद्याविजय प्रेसमां छापी.

Aho ! Shrutgyanam

श्रीमन् पंन्यासजी मणिविजयजी महाराजनुं जीवनचरित्र.

गुजरात प्रांतना खेडा जील्लामां कपडवंज तालुकाना कपडवंज नामना शहेरमां शाह मगनलाल भाइचंद नामे के जे प्रस्तुत जीवनचरित्रना नायकश्री पंन्यास मणिविजयजी महाराजना संसारीपणामां पिता उत्तम श्रावक अने घरना सुखी गृहस्थ हता, दुकाननो धंधो प्रमाणिकपणे करता, अने धर्मअनुष्ठान प्रत्ये पण अतिरुचीवाळा हता, एमनां धर्मपत्नी एटले श्री मणिविजयजी महाराजना संसारीपणानां मातुश्री नामे जमना बाइ पण पतिव्रत धर्मने अनुसरी चालनारां हतां. महाराजश्रीनां मातापिता धर्मनीष्ठ साधुसाध्वीनी भक्तिवाळां, अने गुणानुरागी हतां.

संवत १९२४ नी शालमां मुनिमहाराजश्री झवेर सागरजी महाराजे कपडवंजमां चोमासुं कर्युं. श्री झवेर सागरजी महाराज विद्वान अने उत्तम उपदेशक हता,

Aho ! Shrutgyanam

जेथी चतुर्मासमां महाराजश्रीना रसमय वाणीवाळा धर्मोपदेशवडे सेंकडो जीवो प्रतिबोध पाम्या, तेमां पण मगनभाइ तो प्रथमथीज मुनिभक्तिवाळा अने धर्मीष्ट होवाथी महाराजश्रीना उपदेशथी मगनभाइने एवी वैराग्य वृत्ति जाग्रत थइ के आ संसारना क्षण-भंगुर सुखनो त्याग करवो एज श्रेष्ट छे.

मगनभाइने बे पुत्र हता, मोटा पुत्रनुं नाम मणि-लाल अने नाना पुत्रनुं नाम हेमचंद हतुं हेमचंद चार वर्षे न्हाना हता. बन्नेए सरकारी निशाळमां सारो अभ्यास कर्यो हतो अने बन्नेना विवाह पण थया हता. धर्मीष्ट पिताश्रीना परिचयथी बन्ने पुत्र निरंतर नव-कारमंत्रनुं स्मरण करता, प्रतिक्रमणनां सूत्र अने देह-रासरमां कहेवाना दूहा विगेरे धार्मिक अभ्यास पण करता, मूळथी बन्ने पुत्र बुद्धिशाळी अने पिताश्री धर्म-नीष्ठ तेथी " बाप तेवा बेटा " ए कहेवतने अनुसारे धीरे धीरे धर्मप्रेमी थवाथी घणीवार मुनिनुं व्याख्यान श्रवण करवा जता. त्यारबाद धर्मज्ञान उपर प्रेम थ-वाथी जीव विचार नवतत्व विगेरे केटलांएक प्रकरणो नो अभ्यास कर्यो. मातपिताए बन्ने भाइओने परणा-

Aho ! Shrutgyanam

व्या तो पण पूर्व पून्यना उदये बन्ने भाइनो ज्ञानाभ्यास वृद्धि पामवा लाग्यो अने मार्गोपदेशिका–अमरकोष विगेरे संस्कृत अभ्यास कर्यो. पूर्वभवमां ज्ञान प्राप्त थयु होय तो आ भवमां पण ज्ञान संस्कार चालु रहे-वाथी अल्पप्रयासे ज्ञानाभ्यास बनी शके छे तेम बन्ने भाइओए अल्पप्रयासे संस्कृत ज्ञान प्राप्त कर्युं. पिताश्री मगनभाइ तात्विक पिताश्रीज हता जेथी बन्ने पुत्रो ज्ञानशाळी होवाथी प्रतिबोध पामी चारित्र अंगीकार करे तो एमना आत्मानुं अने परनुं पण कल्याण करी महा उपकार करनार थाय एम इच्छता.

माता जमना बाइ पोताना पुत्रोने भाग्यशाळी ज्ञानशाळी जाणी आनंदमग्न रहेतां, घरमां समृद्धि, अनुकूळ अने भाग्यशाळी पुत्रो अने रुपवान गुणीयल बहुओना सरखा संयोगथी माता जमनाबाइ धर्मनो अतुल्य प्रभाव मानी विशेष धर्मनीष्ठपणे वर्तता हतां. वळी काळनी गति विचित्र होवाथी सुखनिमग्न जीव-नी इर्ष्या करनार काळे मणिलालना वहु माणेकबाइनुं आलोकनुं सुख हरी लीधुं, अर्थात् माणेकबाइ देवगत थयां. आ वखते मणिलालने परण्ये ३ वर्ष थयां हतां

Aho ! Shrutgyanam

अने हेमचंदने परण्ये १ वर्ष थयुं हतुं मणीलालने बीजा विवाहनी वात चालती हती परन्तु मगनभाइनो विचार ए हतो के पुत्रोने चारित्र अपावी मारे पण चारित्र लेवुं. जेथी बीजीवार विवाह स्वीकार्यो नहि.

पूर्व भवना पूण्यथी बन्ने पुत्रो ज्ञानाभ्यास सहित वैराग्यवृत्तिवाळा पण थया. जेथी पिताए बन्ने पुत्रनो चारित्र उपर प्रेम थयो जाणी अमदावाद पासे कासंद्रा गाममां मुनिमहाराजश्री नीतिविजयजी पासे मोकल्या. तेमां मणिलाल पुख्तवयना अने विधुर होवाथी मणिलालने दीक्षा आपी, अने हेमचंद तुरत परणेला अने काची वयना होवाथी तेमने दीक्षा लेवा माटे काळ विलंबनी सूचना करी. मणिलालनुं नाम श्री मणिविजयजी पाडयुं के जेमनुं आ चरित्र लखवा हुं भाग्यशाळी थयो छुं.

मणिलालनी दीक्षा लीधानी वात सांभळी माता जमनाबाइने पुत्रपणाना स्नेहथी दीलगीरी थाय ए स्वाभाविक छे, परन्तु हेमचंदे दीक्षा नहिं लीधेली होवाथी अने पोताना पतिए पवित्र बोध आप्याथी पुनः चित्त विश्रान्ति प्राप्त थइ श्रीमणिविजयजी महा-

Aho ! Shrutgyanam

राजे पोताना उत्कृष्ट भावथी अने पितानी पूर्ण सम्मतिथी दीक्षा लीधेली होवाथी एमनुं चारित्र निर्विघ्नपणे सरळ थयुं, अने गुरुमहाराजनी साथे विहार करवा लाग्या

हेमचंद दीक्षा लीधा विना पितानी साथे घेर आव्या, परन्तु चित्त तो वैराग्य वृत्तिवाळुंज हतुं. पुनः पितानो विचार हेमचंदने दीक्षा आपवानो थतां वर्त्तमानकाळमां विचरता श्रीमद् विजयसिद्धिसूरि पासे मोकल्या. श्रीविजयसिद्धिसूरीजीए दीक्षा आपी. अने श्रीकनकविजयजी नाम राख्युं. दीक्षा लीधा बाद लखतर वीरमगाम तरफ विहार कर्यो.

हेमचंदनी माताने अने सासरीयांने दीक्षानी वातनी खबर पडी के तुर्त सासरीयांए अने माता जमना बाइए अमदावाद जइ सरकारमां अरजी करी. सगीर (काची) वयना होवाथी तेओने भोळव्या छे एम जाणी कोरटे घेर मोकली देवा फरमाव्युं. लोकमां अपवाद न थवाना कारणथी हेमचंद घेर आव्या त्यारथी ससराए तेमने पोताने घेरज राख्या. तोपण स्वाभाविक वैराग्यवृत्ति न बदलाइ पिताश्री

Aho ! Shrutgyanam

मगनलालने दोसी बालाभाइ देवचंद, बालाभाइ दलसुख, अने शंकरलाल विगेरे धर्मीष्ठ गृहस्थोनी मदद हती जेथी पिताश्रीए हाइकोर्टमां अपील करी, सॉलीसीटर तरीके वासुदेव जगन्नाथ तथा बॅरीस्टर तरीके मेकफर्सनने रोकया, कोर्टे चुकादो आप्यो के कोइपण माणसने पोताना आत्महीत माटे धर्म आराधन करतां कोइ रोकी शके नहि. ए प्रमाणे चुकादो थवाथी हेमचंदे लींबडी पासे लाली सात गाममां मोटी धामधूम पूर्वक श्री झवेरसागरजी महाराज पासे पवित्र दीक्षा अंगीकार करी. त्यारबाद अनुक्रमे आगमनो उद्धार करनारा अने सूरिपद संयुक्त थया. नाम श्री सागरानंद सूरीश्वर प्रसिद्ध थयुं.

शा मगनभाइए पोताना बन्ने पुत्रोने दीक्षा अपाव्या बाद संवत १९५० नी शालमां पोते पण दीक्षा लीधी अने नाम श्री जीवविजयजी राखवामां आव्युं. तेओश्री चारित्र पाळी १९ नो सालमां पेटलाद गाममां काळधर्म पाम्या. त्यारबाद जमनाबाइए घणो वखत पालीताणामां रही श्री आदीश्वर भगवाननी यात्रानो लाभ मेळव्यो. तीर्थयात्रा मुनि-

Aho ! Shrutgyanam

भक्ति आवश्यक क्रिया विगेरे अनेक धर्मकार्यो करी जमनाबाइए पवित्र तीर्थस्थळ पालीताणामांज देह त्याग कर्यो.

महाराज श्री जीवविजयजीनी भक्ति निमित्ते हजी पण तेओनी काळधर्मनी तिथि आवे त्यारे पूजा विगेरेथी देवभक्ति करवामां आवे छे. बाइ (श्री सागरानंद सूरीश्वरनां संसारीपणानां धर्मपत्नी) एमना कुटुंबमां हाल श्री सागरानंद सूरीश्वर अने माणेक हयात छे.

श्री मणिविजयजी महाराजे संस्कृत अने प्राकृत व्याकरणनुं ज्ञान सारी रीते संपादन कर्युं. छाणी गाममां रही शेठ कीलाभाइ करमचंदनी सहायथी श्रीमंत सरकार गायकवाड महाराजना शास्त्री काशी निवासी राजाराम भाइ पासे न्यायशास्त्रनो अभ्यास कर्यो, तेमज अंग्रेजी भाषानो पण अभ्यास कर्यो.

संवत १९७० मां छाणी गाममां पन्यास पदवी मळी.

तेओए कपडवंज, अमदावाद, छाणी, कालीआवाडी, लींबडी, वढवाण, भावनगर, शीहोर, पेटलाद, खंभात, नार, वडोदरा, अने तळाजा विगेरे गामोमां

Aho ! Shrutgyanam

चोमासां कर्यां. छेल्लुं चोमासुं पालीताणा पासे तलाजा गाममां रह्या. ते गाममां प्लेगनो उपद्रव होवाथी अने मुनिए धर्मक्रियाना निर्वाह माटे रोगादिक उपद्रववाळा स्थाननो त्याग करवो एवो विधिमार्ग होवाथी महाराजश्री तलाजाथी विहार करी त्रापज गाम पधार्या, त्यां शरीरे व्याधि थवाथी संवत १९७८ नी सालमां कारतग शुदी ३ ने रोज काळधर्म पाम्या. एवा मुनि महाराजनुं गुणकीर्त्तन करवाथी हुं मारा आत्माने कृतार्थ थयो मानुंछुं. अने आ अल्प जीवनवृत्तांत वांचनार बीजा महाशयो पण ज्ञानादि गुण प्राप्त करी पोताना आत्माने कृतार्थ करे ए हेतुथी महाराजश्रीनुं टुंक जीवनचरित्र मारी अल्पमति प्रमाणे लखेलुं छे, तेमां जे कंइ भूल चूक अविनय अने अनादर थयो होय तो हुं अंतःकरणपूर्वक क्षमा मागुंछुं. —इत्यलं.

ता. क. आ बुकोनो तमाम खर्च लुणसावाडावाला रा. रा. मामलतदार उमाभाइ जेठाभाइए आपेलो छे अने उपरनुं चरित्र तेमनी प्रेरणाथीज प्रसिद्धिमां मुकवामां आव्युं छे. प्रसिद्ध कर्ता.

Aho ! Shrutgyanam

॥ वन्दे वीरमानन्दम् ॥

॥ श्री गिरनार गल्प ॥

चरम तीर्थंकर श्रीमन्महावीर देवके समयमे -क्रिया-अक्रिया-अज्ञान-विनय—आदि पक्षोंको-स्वीकारने वाले (३६३) मतावलम्बी कहेजाते थे, परंतु-हालके वर्त्तमान युगमें उस संख्या की भी सीमा नही रही। समयकी गतिके साथ धर्मों की गतिका भी परिवर्त्तन होता है, आज भारत वर्षके अन्यान्यलभ्य और दृश्य अनुमान (३१) क्रोड़ जनसमुदित वस्तिपत्रकमें, बावन लाख साधु और-तीन हजार पंथ सुने जाते हैं। धर्म और धर्मियोंकी इस विशाल संख्यामें ज्यादा हिस्सा आ-

Aho ! Shrutgyanam

स्तिक लोगोंका ही है। आस्तिक किसी देश ज-नपद या–जाति विशेषका नाम नहीं है। आस्तिक वह ही कहे जासक्त हैं कि–जो जीव–अजीव–पुण्य–पाप–आश्रव–संवर–निर्जरा–बंध–मोक्ष– जन्म –जन्मान्तर–स्वर्ग नरकके साथ ईश्वर परमात्माका होना कबूल करते हों. ईश्वरको सर्वज्ञ–सर्वदर्शी–दयालु–मायालु–नीरज–परोपकारी–अनंत चतुष्टय धारक निरीह–निरभिमानी–अक्रूर–ऋजु–अमायी —सत्यमार्ग देशक–धर्मचक्रवर्त्ती–धर्मसारथी—त्रिलोकी त्राता आदि यथार्थ गुणोंके सागर मा-नकर उनके वचनोंका आराधन करते हैं। उनके बतलाये राहो रास्तेपर चलना यह भी ईश्वरकी भक्ति–पूजा–सेवा–सुश्रूषा कहलाती है, जैसे प्रभु पुष्पादिसे पूजे जाने पर–श्रद्धालुकों मोक्षदाता होते हैं. वैसे उनकी आज्ञाके पालककों भी वह परम-पद देते है, धूप–दीप–जल–चंदन आदि विविध प्रकारकी पूजा करनेवालेकों पहले उस जगद्व-त्सल के आज्ञा वचनोंपर यकीन रखनेकी खास जरूरत है। "आस्था मूलाहि [illegible]"

Aho ! Shrutgyanam

यहां एक बात और कहनी रह जाती है कि जिसका उल्लेख करना खास आवश्यक और प्रासंगिक है. 'ईश्वर संसारमें एक उत्तमोत्तम पद्वी है कि जिसकों हर एक भव्य जंतु अपने सात परिशीलितविशुद्ध आचरणोंसे हाँसिल कर सकता है। 'धनसार्थवाह' के भवमें बीजारोपण करके जीवानंदके जन्ममें उसको विशेष सींचकर और वज्रनाभके भवमें उसके मूलको खूब परिदृढ करके अर्थात् चौद लाख पूर्व-वर्षके विशुद्ध चारित्र पर्याय और निर्निदान-निराकांक्ष-तपसे निकाचित कर जो गुणरूप सुरशाखी प्रथम-तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजीके जीवने अपने आत्मारामभें लगाया था प्रतिबंधक कर्मोंको क्षयकर जो सर्वज्ञत्व-सर्वदर्शित्व-गुरुगुण नाभिराजाके अंगजने प्राप्त किया था वहही आत्मबल-वहही शक्ति-सामर्थ्य-वह कारण कलाप-उनके पौत्र मरीचिमें भी था. वह ऋषभनाथ प्रभुके आत्मगत केवलज्ञान केवल दर्शनादि क्षायिक भावोपगत-आविर्भूत थे. और मरीचिके भाविभद्रात्मामें वह सर्व गुण खानिस्थ मणी

Aho ! Shrutgyanam

की तरह तिरोभावमें थे. मरीचिने भी " नयसार ग्रामचिंतक" की अवस्थामें उस मंदार तरुके बीज तो बीजे ही हुए थे; सिर्फ आगेका क्रिया संदर्भ ही अवशिष्ट था, उसको भी " नंदनकुमार " के भवमें विशुद्धात्मवीर्यसे आचरणागोचर कर वह ही भी " वीर " के भवमें श्री ऋषभदेवके समान हो गये। जैनदर्शनमें "ईश्वर" पदके अधिकारी जो लोकोत्तर सामर्थ्यशाली-उत्तमोत्तम जीवात्मा होते हैं उनको " सामान्य केवली " "और तीर्थंकर" इन दो नामसें उच्चारा जाता है. सामान्य केवली हरएक जातिमें-हर एक कुलमें-नर नारी आदि हर एक लिंगमें केवलज्ञान केवलदर्शनकी संपत् प्राप्त कर सक्ते हैं। तीर्थंकर-देव फक्त राजवंशी क्षत्रीयकुलोत्पन्न ही और वह भी पुरुषोत्तम ही होते हैं। पूर्वभवोपार्जित पुण्ययोगसे माताको चतुर्दश स्वप्नोंसे अपने भावि महोदयकी सूचना दिलाते हुए जात मात्रही देवदेवेन्द्रोके पूजनीय, वंदनीय, अर्चानमस्याके पात्र होते है ॥

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणीके छ छ आरोंका

Aho ! Shrutgyanam

एक कालचक्र कहलता है. अवसर्पिणी का पहला आरा चार कोटाकोटि सागरोपमका होता है दूसरा आरा तीन कोटाकोटि-तीसरा दोका, चौथा ४२ हजार वर्ष कमती एक कोटाकोटि सागरोपम का, पांचवां (२१) हजार वर्षका और छठा भी (२१) इक्कीस हजार वर्षका माना गया है. सब मिलकर (१०) कोटाकोटि सागरोपमकी अवसर्पिणी और (१०) कीही उत्सर्पिणी मानी गई है। उत्सर्पिणीमें पहला २१ हजार वर्षका, दूसरा भी २१ हजार वर्षका, तीसरा ४२ हजार वर्ष न्यून एक कोटाकोटि सागरोपमका, चौथा दो, पांचमा ३-और छठा ४ कोटाकोटि सागरोपमकी स्थितिवाला गिना जाता है ॥

अवसर्पिणीके तीसरे आरेकी आखीरमें पहला तीर्थंकर और चौथे आरेमें २३ तीर्थंकर होते हैं-उत्सर्पिणीके तीसरे आरेमें २३ और चौथे आरेके प्रारंभमें अंतिम चौवीसवें तीर्थंकरदेवका होना माना गया है । इस वर्तमान अवसरपिणीकालमे-श्रीऋषभदेव १ श्री अजितनाथ २ श्री संभवनाथ ३ श्री

Aho ! Shrutgyanam

अभिनंदनस्वामी ४ श्री सुमतिनाथ ५ श्री पद्मप्रभ स्वामी ६ श्री सुपार्श्वनाथ ७ श्री चंद्रप्रभस्वामी ८ श्री सुविधिनाथ ९ श्रीशीतलनाथ १० श्रीश्रेयांसनाथ ११ श्री वासुपूज्यस्वामी १२ श्रीविमलनाथ १३ श्री अनंतनाथ १४ श्रीधर्मनाथ १५ श्रीशांतिनाथ १६ श्री कुन्थुनाथ १७ श्री अरनाथ १८ श्री मल्लीनाथ १९ श्रीमुनिसुव्रतस्वामी २० श्री नमिनाथ २१ श्री नेमिनाथ २२ श्रीपार्श्वनाथ २३ श्री महावीरस्वामी २४ येह चौवीस तीर्थंकर महाराज हुए हैं। इन महाप्रभावशाली तीर्थंकर देवोंकी पांच अवस्थाओंका नाम "कल्याणक" है. च्यवनकल्याणक । जन्मकल्याणक । दीक्षा कल्याणक । केवलज्ञान कल्याणक । और निर्वाण कल्याणक । किसी तीर्थंकर देवका कोइ कल्याणक कहीं होता है और कोई कहीं होताहै। जहां जहां उन परमेश्वरोंके कल्याणक होते हैं उन क्षेत्रोंका—कल्याणोंके योगसे कल्याणक भूमि नाम प्रख्यात हो जाता है। वर्तमान चौवीसीके बावीसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजीके दीक्षा, केवल और निर्वाण येह तीन कल्याणक " श्री गिरनार "

Aho ! Shrutgyanam

(रैवताचल) पर्वतपर हुए हैं। "उज्जितसेलसिहरे दिख्खा नाणं निसिहिआ जस्स" इत्यार्ष वचनात्।

श्री नेमिनाथजीके विषयमें लोकोक्तियें"

श्री नेमिनाथ स्वामीके नाममें 'नाथ' शब्दको देखकर और उधर अपने धर्ममें-गोरख-मच्छन्दर-आदि नामोंके साथभी नाथ शब्दको देखकर दर्शनान्तरीय लोग और और कल्पना करलें यहतो क्षंतव्य है, परंतु किसी प्रसिद्ध इतिहास वेत्ताने यदि ऐसी भूल करदी हो तो वह अक्षंतव्य है

टोड राजस्थानके अनुवादक पंडित ज्वालादत्त शर्मा लिखते हैं "टोडसाहिबके मतानुसार चार बुध " माने गये हैं। साहिब कहते है कि यह चारों " बुध एकेश्वर वादी थे। और उक्त धर्मका एशि-" यासे लाकर भारतवर्षमें प्रचार किया था। उ-" नके समस्त धर्मशास्त्र एक प्रकारकी शंकुशीर्षाकार " वर्णमालामें लिखे हुए है । सौराष्ट्र-जैसलमेर " और विशाल राज्यस्थानके जिस जिस स्थानमें

Aho ! Shrutgyanam

" पहले बुध और जैनलोग बास करते थे. टोड
" साहिब उन सब देशोमें जाकर उनके धर्मकी
" अनेकशिलालिपी और ताम्र शासन लायेथे। उन
" चारों बुधोंका नाम नीचे लिखते हैं.

" प्रथम बुध-(चंद्रवंशकी प्रतिष्ठा करनेवाला) अनुमान इसवीसे पहिले २५५० वर्षमें उत्पन्न हुआ

" द्वितीय-नेमिनाथ-(जैनियोंके मत बाइसवां) इसासे ११२० वर्ष पहले हुआ।

" तृतीय-पार्श्वनाथ-(तेइसवां) ईसासे ६५० वर्ष पहले हुआ।

" चतुर्थ-महावीर-(चौवीसवां) ईसासे ५३३ वर्ष पहले उत्पन्न हुआ "

सोचना चाहियेकि, जिस जैन शासनकी आज्ञा को प्रायः आधा संसार शिरोधार्य मानताथा, जिस जैन धर्मको अशोकके पूर्वज श्रेणिक प्रभृति राजा प्रेम पूर्वक पालतेथे, जिस जैनधर्मने उखडती हुई गुर्जर-राजधानीको फिरसे वद्ध मूल करदियाथा, जिस धर्मका सिद्धराज जैसे नरेश मानकरते थे, और चौलु-

Aho ! Shrutgyanam

क्य चिन्तामणि कुमारपाल तो जिसमें गृहस्थ दीक्षा पाकर पूर्ण कृतकृत्य हुएथे। जिस पवित्र धर्ममें–एक तुच्छ मानव जीवनमें–तीस अबज तिहोत्तर क्रोड सात लाख बहत्तर हजार जितनी संपत्ति खर्च करके जगत्का कल्याण करने वाले वस्तुपाल तेजपाल जैसे मंत्री हुए हैं, जिस दयालु–विशाल–धर्ममें जगडुशाह जैसे महापुरुषोंने क्रोडों रुपये खर्चकर भूखे मरते हजारों नहीं बलकि लाखों करोडों मनुष्योंकी जानें बचाइ हैं, जिस उदार शासनके परम भक्त भाग्यवान् भामाशाहने अस्ताचलपर पहुंचे हुए मेवाड क्षत्रियोंके प्रतापसूर्यको फिर तपाकर छाये हुए अनीति अंधकारको देश निकाला दिया और दिलवाया है; आज उस धर्मकी शोचनीय दशा हो रही है। मनमाने आक्षेप, मनमानी मिथ्या कल्पनाएँ होती चली जा रही हैं परंतु कोइ किसिके सामने माथा ऊंचा नहीं कर सकता ! ! !

अफसोस है कि–आज संसारमें भगवान् "हरिभद्र सूरि" और भगवान् श्री हेमचंद्रसूरि नहीं हैं कि जिनकी वाचा और लेखिनी के डरे हुए वादि

Aho ! Shrutgyanam

द्वन्द्व परास्त हो कर इस उद्घोषणाको सत्य मानते थे कि " न वीतरागात्परमस्ति दैवतं, न चाप्यनेकान्तमृते नयस्थितिः " जिस हरिभद्र सूरिके " नास्माकं सुगतः पिता न रिपवस्तीर्थ्या धनं नैव तै-र्दत्तं नैव तथा जिनेन न हृतं किञ्चित्कणादादिभिः । किन्त्वेकान्तजगद्धितः स भगवान् वीरो यतश्चामलं, वाक्यं सर्व मलोपहर्तृ च यतस्तद्भक्तिमन्तो वयम् ॥१॥" तथा "पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु । युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः ॥२॥" ऐसे-मध्यस्थ भाव भरे-औदार्य गुणपूर्ण-उद्गारोंको सुन सुन आज भी निष्पक्षवादी संसार उन्हें शिर झुकाकर पूज्यपाद-सदा स्मरणीय-संसारके उद्धारक पुरुष-ऐसे २ पवित्र नामोंसे बुला रहा है। आजके प्रायः साधनप्रचुर संसारमें पवित्र धर्मके सिद्धान्तोंको प्रकट कर दिखाने के लिये ऐसे पुरुषोत्तमावतारकी और " न रागमात्रात्त्वयि पक्षपातो, न द्वेषमात्रादरुचिः परेषु । यथावदाप्तत्वपरीक्षया तु, त्वामेव वीरप्रभुमाश्रयामः ऐसे विश्वजनीन सत्यनादकी गर्जना के करने-

Aho ! Shrutgyanam

वाले—चौलुक्य वंश तिलकायमान—परमार्हत—कुमार-पाल भूपति के धर्मगुरु कलिकाल केवलिकल्प प्रभु श्री हेमचंद्रकी भी उतनी ही आवश्यकता थीकि जितनी १४४४ ग्रंथोंके निर्माता गुरु श्री हरिभद्रजी की थी। आजकी सांप्रतकालीन जनता—बडी खुशी से झुकती है परं कोई सत्य कह कर झुकाने वाला चाहिये. आजकी सृष्टि संसार के तखते परके किसीभी धर्मको मान देती है—कोई दिलानेवाला चाहिये। ऐसा न होता तो "पूज्यपाद—प्रातःस्मरणीय—न्यायाम्भोनिधि—श्रीमद्विजयानंद सूरि (आत्मारामजी) महाराजने दिल्लीसे लेकर पंजाबके पश्चिम तट तक के भूले हुए लोगोंको कैसे सन्मार्गगामी बनाया होता ? श्री लक्ष्मीविजयजी (विश्नुचंदजी) जैसे अखर्व पांडित्य पूर्ण साधुओंको अपने सच्चे अनुयायी क्योंकर बनाया होता ?

मनुष्य अपने आत्मावलंबनसे दूसरेका अनुकरणीय बन सकता है। संसारमें सदाचारी मनुष्य देवदेवेंद्र और सार्वभौम राजाको भी मान्य होता है। सृष्टिके सदाचारोंमें " वृद्धानुगामिता " एक बड़े में

Aho ! Shrutgyanam

बडा सदाचार है लोकोक्ति है। कि-"बद न सोचे जेमगर दूगर कोइ मेरी सुने। है यह गुम्मजकी सदा जैसी कहे वैसी सुने" कलिकाल सर्वज्ञ-इतने दर्जे तक पहुचनेपर भी अपने गुरु महाराजके परमभक्त थे. इसी लियेही-कर्णाटक से हिमाचलके बीचकी २२ राजधानियोंपर हकूमत करनेवाला सिद्धराज जय-सिंह, और तुरक देश-गंगातट-विन्ध्याचल-और समुद्र किनारे तक भूमिके एक छत्रराज्यको करने-वाला कुमारपालभी उनकी आज्ञाको देव निर्माल्य की तरह शिरोधार्य करते थे।

स्वामित्व-और-स्वीकार.

जैसे वैश्नव संप्रदायमें द्वारिकापुरी जगन्नाथपुरी आदि स्थानोंको पवित्र तीर्थ स्थान रूपसे स्वीकारा गया है। शैवोने जैसे सोमेश्वर, अंकलेश्वर-तडकेश्वर जगदीश्वर, नगेश्वर-इकलिङ्ग भीडभंजन प्रभृति स्थान नगर गतमंदिर मूर्तियोंको पूज्य माना है। इस्लाम-वालोंने जैसे मक्का, मदीना, ख्वाजापीर, ताजबीबी,

Aho ! Shrutgyanam

जुमामस्जिद वगैरह जागाको अपने मान्य और पवित्र पाक समझा है। पंजाबमें सिक्ख महाशयोंने जैसे अमृतसरके दरबार साहिबको, तरनतारनको, भदैनी साहिब और रोड़ी साहिबको। गुसाँइ समाजने व्होकी के मंदिरको। रामचंद्रजीके उपासकोंने सेतुबंध रामेश्वरको, वैदिक पौराणिकोंने काशी-बाणारसीको। नदियोंके भक्तोंने जैसे गंगा यमुना त्रिवेणी सरस्वती वगैरहको अपने पुण्यक्षेत्र माने और स्वीकारे है, ऐसे जैन संप्रदायमें-शत्रुंजय-गिरिनार-आबु-अष्टापद-सम्मेतशिखर-कुलपाक, जीरावला-अंतरिक्ष-माँडवगढ, अवंती, केसरियाजी, कांगडा, कावी, भेरा, हस्तिनापुर, पावापुरी, चंपापुरी, राणकपुर, वरकाणा, शंखेश्वर, भोयणी, नाडोल, नाडलाइ, मुछाला महावीर, पानसर, मित्राणा, झगडिया, महुवा, डाठा, फलौधी पार्श्वनाथ, कापरडाजी, ओसिया आदिको पावन तीर्थ स्थल माने गये हैं। उनमेंभी तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय और गिरिनारको अत्युत्कृष्ट तीर्थोत्तम सदा स्मरणीय सदा वंदनीय पूजनीय माना है।

Aho ! Shrutgyanam

तीसरे आरे के अवसान समयमें पहले तीर्थंकर श्री " ऋषभदेव स्वामी " हुए हैं, उनके चौरासी गणधरोंमेंसे " पुंडरीक स्वामी " जो मुख्य शिष्यथे, उन्होने खुद श्री ऋषभदेव स्वामीके मुखारविन्दसे श्री शत्रुंजय महातीर्थ का माहात्म्य सुन कर सवा लाख श्लोक प्रमाण श्री शत्रुंजय माहात्म्य नामक ग्रंथका निर्माण कियाथा. एदंयुगीन मानवोंको अल्पायुः और अल्पमेधावी जानकर श्रीवीरप्रभुके पट्टधर पंचम गणधर श्रीसुधर्म स्वामीजीने उस महान् ग्रंथको घटाकर २४००० श्लोकमें रचाथा, आगामी कालके मनुष्योंकी स्थितिका पर्यालोचन करते हुए श्री " धनेश्वरसूरि "जीने श्री गणधर प्रणीत ग्रंथको भी १०००० श्लोकोंमे संक्षिप्त किया है ।

फिल हाल श्री आदि नाथ-भगवान् के तीर्थसे लेकर आज तक यह तीर्थ-जैन प्रजा के ही सर्वथा माने गये हैं और माने जा रहे हैं । हां कोई ऐसा भी समय आजाता है कि-उन उन देशोंके या नगरोंके नरेश जब प्रबल

Aho ! Shrutgyanam

पक्षपाती होजाते हैं तब वह उन तीर्थोंपर अपनी अपनी श्रद्धा के मुताबिक मनमाने अधिकार जमानेका उद्यम करते हैं। ग्यारवीं शताब्दिमें जब संडेर गच्छ नायक-श्रीयुत्-ईश्वर सूरिजीके पट्टधर-श्री [1]यशोभद्र सूरिजी *आहडके रहनेवाले मंत्रीके संघके साथ श्री शत्रुञ्जय और गिरिनार तीर्थकी यात्रा

---

१. आचार्य श्री यशोभद्र सूरिजीका-जन्म विक्रम संवत् ९५७ में आचार्य पद्वी संवत् ९६८ में। और १०३९ में स्वर्गवास। जन्मसे ११ वें वर्ष सूरिपद और उसी दिनसे यावज्जीवतक आंबिलकी तपस्या। आंबिलमें भी फक्त ८ कवल प्रमाण ही आहार। विशेष वर्णन मेरे लिखे श्री यशोभद्र सूरि चरित्रसे, या श्री विजयधर्म सूरि संपादित ऐतिहासिक रास संग्रह भाग दूसरे से जानो।

* आहड-का प्राचीन नाम आद्याट है, प्राचीन तीर्थोंकी नामावलीमें-"आघाटे मेदपाटे" ऐसा जो उल्लेख है वह इसी हि नगरके लिये है. यहां आज भी जैनके विशाल-और उत्तुंग मंदिर हैं।

Aho ! Shrutgyanam

करने गये थे उस वक्त जूनागढका राजा २रावखें-गार जूनागढकी गादी पर था. उसने सूरिजीका बडा सत्कार किया. और उन्ही आचार्यश्रीजीके शिष्य " बलिभद्र " मुनि जब किसी संघपति के बुलाने-पर वहां गये तब वह ही रावखेंगार बुद्धधर्मका पूर्ण पक्षपाती हो गया था.

।यह वृतान्त संक्षेपसे नीचे लिखा जाता है ।

किसी पुण्यात्मा कल्याणार्थी जीवने गुरूपदेश को श्रवण करके लक्ष्मीके सदुपयोगका उत्तम मार्ग समझ कर श्री सिद्धगिरि और रैवताचलका संघ निकाला. श्री संघ जगती तिलक श्रीशत्रुंजय तीर्थकी

"यह आहडा ग्राम–उदयपुरसें १ मील पूर्वकीं ओर रेल्वेस्टेशनके पास है. आजकल राणा वंशका दग्ध स्थान यही है । यह गाम तीर्थभी माना जाता है ।

२–राव खेंगार वि.सं. ९१६ में गादीपर बैठा था. इसके बापका नाम नवधन था ।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

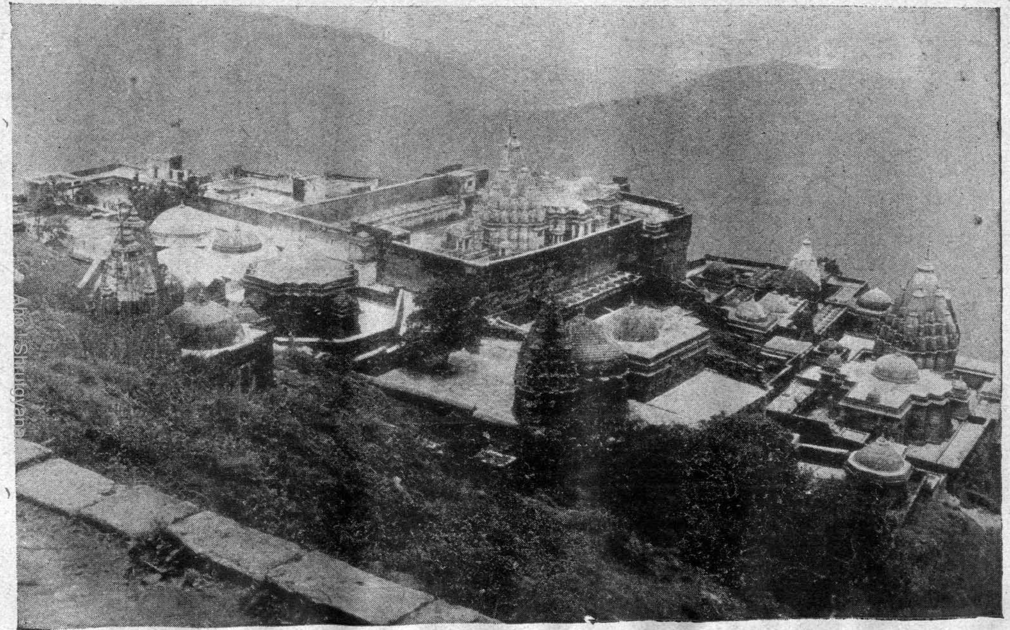

गिरनारपर्वत—नेमिनाथकी टुंक.

Aho ! Shrutgyanam

यात्रा करके जब गिरिनार पहुंचा तब वहांके राजा रावखेंगारने उन्हे ऊपर जाने से रोका और कहा " यह तीर्थ बुद्ध धर्मका स्थान है, इसपर तुमारा किसी किसमका दखल नहीं, अगर तुम इस तीर्थकी यात्रा करना चाहते हो तो तुमको पहले बौद्ध धर्मको मानना जरूरी है, सिवाय इस शरतके तुम इस तीर्थ पर किसी तरहभी पूजा सेवाका लाभ नही ले सकते !! उसवक्त वहां औरभी ८३ गाम नगरों के संघ आये हुएथे. उन सर्व संघपतिओंने खेंगारको अनेक रीतिसे समझाया प्रलोभन तक भी दिया परंतु वह अपने हठसे न फिरा। संघवियोंने अपने सहचारियोंको पूछा कि अब क्या करना चाहिये ? संघके साथ जो वृद्ध विश्वसनीय मनुष्य थे, उन्होंने कहा इसवक्त किसी प्रभावक पुरुषकी आवश्यकता है। इतने में "अंबिका" माताने किसी मनुष्य के शरीरमें प्रवेश करके कहा, किसी दुष्ट व्यन्तरने बौद्ध धर्मपर अपनापना होनेसे इस तीर्थको बौद्ध तीर्थ ठहराया है, और राजा उस धर्मको मान देता है। जाओ फलानी पर्वत गुफामेंसें बलभद्र मुनिको ला-

Aho ! Shrutgyanam

ओ वह हरतरहसे समर्थ है। संघवियोंके बुलानेपर मुनिने वहां आकर राजाको समझाया. परंतु जब देखाकि यह सामसाध्यतो नहीं तब अपनी मंत्र-शक्तिसे उसे वशवर्त्ती करके श्रीतीर्थाधिराज गिरि-नारको जैन संप्रदायके हस्तगत किया (विशेष के लिये देखो ऐतिहासिक राससंग्रह भाग दूसरा और उपदेश रत्नाकर संस्कृत, पत्र ९३। ९४।

सज्जनकी विचार पटुता—और सिद्ध राजाका—औदार्य—

अक्सर करके इतिहास ग्रंथोंमें प्रसिद्ध है कि " वनराज चावडे " ने विक्रम-संवत् ८०२ में राज्य सिंहासनपर बैठकर जांबकों अपना प्रधान मंत्री बनाया था. जांब जैन धर्मका पक्का उपासक था। वनराजके पाट पर हुए २ योगराज १ क्षेमराज २ भूवड ३ वैरिसिंह ४ रत्नादित्य ५ सामंतसिंह ६। यह सात राजा (चावडा वंशीय)—और—

वृद्ध मूलराज १ चामुंडराज २ वल्लभराज ३ दुर्लभराज ४ भीमराज ५ कर्णराज ६ जयसिंहदेव

Aho ! Shrutgyanam

७ कुमारपाल ८ अजयपाल ९ लघु मूलराज १० लघुभीमराज ११ राजा (चौलुक्य वंशीय)–और वीरधवल १ वीसलदेव २ अर्जुन देव ३ सारंग देव ४ घेला कर्ण देव ५ (वाघेला वंशीय)

इन गुर्जर राजाओंकी राज्य सत्तामें मंत्री, महामंत्री–दंडनायक–सेनापति–वगैरहजो जो होते रहे हैं वह सभी के सभी प्रायः जैनधर्मानुयायी ही होते रहे हैं। और अपनी अपनी शक्ति के अनुसार शत्रुंजय गिरिनार आदि तीर्थोंका उद्धार करते ही रहे हैं। महाराजा सिद्धराज के समय सज्जन नामक दंडपति जो कि काठियावाडका अधिकारी था, उसने सोरठ देशकी तीन वर्षकी आमदनी खर्च करके श्री गिरिनार तीर्थकी मुरम्मत कराई। जब वह पाटण आया तब राजाने उससे रुपया मांगा। उसने थोडे दिनोंके लिये फिर सौराष्ट्रमें जाकर जैन शाहुकारोंसे रुपया मांगकर पाटण आकर राजाके सामने रख दिया और नम्रभावसे अर्ज की, कि ३ वर्षका वसुल किया हुआ राजद्रव्य मैंने तीर्थोद्धारमें लगा दिया है और यह द्रव्य शाहुकार

Aho ! Shrutgyanam

लोगोंसे मांगकर लाया हूं। आपकी मरजी हो तो आप रुपया लेलेवें और आपकी इच्छा हो तो आप तीर्थोद्धार के पुण्यकी अनुमोदनाका फल प्राप्त करें।

राजाने दंडनायककी तारीफ करते हुए कहा "तुमने इस युक्तिसेभी हमको पुण्यके भागी बनाए। इस लिये हम तुमारी सज्जनताकी पुनः पुनः श्लाघा करते हुए उस पुण्यकी श्लाघासे पूर्ण तृप्त हैं। द्रव्य जहां जहांसे लाये हो उनको वापिस लौटा दो धन विनश्वर है और धर्म अविनाशी है। धन यहांका यहां रहने वाला है और धर्म भवान्तरमेंभी साथ आकर मनुष्यको हर एक समय सहायक होनेवाला है। इस वास्ते हमको पुण्यका स्वीकार सर्वथा इष्ट है और हम इस बिना पूछे किये कामके लिये भी तुमपर पूर्ण खुश हैं."

धन्य है ऐसे राजभक्त कर्मचारियोंकों! और साधुवाद है ऐसे नरेशोंकों!!

एक समय राजा सिद्धराज खुद गिरनार तीर्थकी यात्रा करने गये। तीर्थाधिराजकी पवित्रता-उत्तमतासे अति प्रसन्न हो कर उन्होंने कुछ गाम

Aho ! Shrutgyanam

भेट किये और आशातनाके परिहारके लिये कुछ फरमान जारी कर दिये। जैसे कि–इस तीर्थपर फलाना फलाना काम किसीने नही करना (इस वर्णनके लिये मेरा लिखा कुमारपाल चरित्र हिन्दी पुस्तक देखो)

दिगंतकीर्त्तिक–महाराज–सिद्धराजका जैन धर्मसे इतना घनिष्ट संबंध था कि–अन्य केई एक इतिहासकारोंने तो उन्हें जैनहीके नामसे लिखडाला है। " कर्नल जेम्स टॉड साहेबने अपने बनाये टॉड राजस्थान नामक पुस्तककी फुटनोटमें लिखा है कि " सिद्धराज जयसिंहने संवत् ११५० से १२०१ तक राज्य किया, प्रसिद्ध निडवियन भूगोलवेत्ता [एलएड्री] इसकी राजसभामें गयाथा। एल, एड्रीसीभी कहता है कि–जयसिंह सिद्धराज बौद्ध धर्मावलंबी था। टॉड राजस्थान अध्याय ६। फिर देखना चाहिये कि–इतिहास लेखक–राजा शिवप्रसाद–सितारे हिन्द क्या ब्यान करते हैं–

"इदरीसि जो ग्यारहवी सदीके आखीरमें पैदा हुआ था. लिखता है कि–अणहिल्लवाड (अर्थात्

Aho ! Shrutgyanam

सिद्धपुर पाटण) का राजा बौद्ध है. सोनेका किरीट सिरपर पहनता है. घोडेपर बहुत सवार होता है, हिन्दुस्तानके आदमी बडे इमानदार है। अगर कोइ किसी अपने कर्जदार के गिर्द हल्का खिंच देता है जब तक वह कर्जदार कर्ज अदा या इजाजत हांसिल नही करता हल्केसे बाहिर नही निकल सकत। गोशतके लिये कोइ जानवर नहीं मारा जाता गाय बैलोंकों बुढापेमेंभी खानेको मिलता है। (बौद्धसे वाचक महाशय जैनही समझें क्यों कि- ग्रंथकर्त्ताने स्वयंही ग्रंथके ९ वें पृष्टमें लिखा है कि)-"हमने जो जैन न लिखकर *गौतमके मतवालोंकों बौद्ध लिखा उसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि-उनको दूसरे देशवालोंने बौद्धके नामसे ही लिखा है, जो हम जैनके नामसे लिखें तो बडा भ्रम पड जायगा (इतिहास तिमिरनाशक खंडतीसरा। पृष्ट ५४)

---

* गौतम-श्री महावीरस्वामीके सबसे बडे शिष्यका नाम था जिसकों जैन जाति "गौतम स्वामी" इस नामसे पहचानती है।

Aho ! Shrutgyanam

–तीर्थभक्ति–और–सुगममार्ग–

आबुरोड (खराडी) से देढ दो माईल पूर्वकी तर्फ कुछ खंडहर पडे हुए दिखाई देते हैं, यहां पहले जमानेमें "चंद्रावती" नगरी आबादथी । राजा भीमके सेनापति बिमलशाह मंत्री राजा से नाराज होकर यहां आकर द्वादश छत्रपति राजा हुएथे। और–आबुके जैनमंदिर उन्होंने यहां रहकर ही बनवाये थे. चौलुक्यकुलतिलक कुमारपाल जब–रणथंभोरपर चढाई लेकर गये तब यहां के राजा सामन्तसिंहने अन्तर्द्विष्ट–और मुखेमिष्टवाली कपट जाल फैलाकर सोलंकी राजाका नाश करना चाहा था–परंतु–कुमारपाल अपनी दीर्घदर्शितासे उसके उस प्रपंचको जान गयाथा । आते हुए उसने सामंतसिंहको पुण्यका चमत्कार बतला कर सत्य रूपसे समझा दिया था कि–" यस्य पुण्यं बलं तस्य "

इस चंद्रावतीका रहीस उदयन नामक शाहुकार जो घीका व्यापारी था. फिरता फिरता खंभात चला गया. वहां उसको अछे शकुन हुए । थोडे अरसेमें सिद्धराजकी तर्फसें वह सरकारी नौकर बनाया गया।

Aho ! Shrutgyanam

क्रमशः एक समय ऐसा भी आगया कि गुर्जरपति सिद्धराज के वो पूर्ण विश्वासपात्र मंत्री बन गये। सिद्धराजकी मृत्युके पीछे वह, कुमारपालके भी वैसे ही मानीते मंत्री बने रहे। कुमारपालका इनपर बडा भरुसा था। बल्कि सिद्धराज जयसिंहकी तीव्र इच्छा इनके लडके चाहडको राज्य देनेकी होनेपर भी यह नर रत्न कुमारपालको राज्य दिलानेमें और संकट ग्रस्त कुमारपालकी जान बचानेमें पूरे पूरे मददगार थे। सोरठ देशके समर राजासे लडने वास्ते फौज दे कर कुमारपालने इन्हे सौराष्ट्र भेजा था। उसे कथाशेष कर—और उसके लडकेको उसकी गादीपर बैठाकर उदयन मंत्री पीछे लौट रहे थे कि—रास्तेमे उनकी तबीयत बहुत बिगड गई। अनेक उपाय करनेपर भी उन्हें कुछ आराम न हुआ। उन्होंने जब जाना कि मेरा यह अवसान समय है तब अश्रुपात कर रो पडे ! पास के लोगोंने उनको अनेक तरहसे आश्वासन दिया। तब वह बोले मैं मरनेके भयसे नहीं रोता, मेरे निर्धारित चार काम शेष रह जाते हैं और मेरी जीवनदोरी समाप्त होती है !! परंतु इसमें किसीका भी उपाय नहीं।

Aho ! Shrutgyanam

पासके लोगोंने पूछा आप कृपाकर उन कामोंका नाम बताऐं हम राजासे और भट्ट आपके पुत्रोंसे पूर्ण करायेंगे। मंत्रीने कहा—मैं चाहताथाकि—आम्रभट्ट (अंबड) को दंडनायक की पद्वी दिलाउं। १। दूसरी मेरी इच्छाथी कि—श्री शत्रुञ्जयतीर्थका उद्धार कराउं ॥ २ ॥ तीसरा मेरा मनोरथ थाकि गिरिनार तीर्थकी पौडियां बनवाउं ॥ ३ चौथी मेरी उत्कट कल्पना यह थी कि जब कभी मेरा मृत्यु हो उस वक्तमें अपने अंत्यसमयकी आराधना मुनि महाराजके सामने करुं और उन महात्माओंके सन्मुख आलोचना करके अपने इस भारी आत्माकों हलका करुं ॥ ४ ॥ इन चार कार्योंमें से एक कीभी सिद्धि न होनेसे मैं अपने हताश आत्माको धिक्कार कर रो रहा हूं !

पास बैठे हुए मंत्री लोग बोले आप निश्चिंत रहें पहले ३ कार्य तो आपका सुपुत्र वाहड करेगा। और आलोचना के लिये हम साधु महाराजकी तलाश करते हैं। देखनेसे (मालूम हुआ कि इस जंगलमें मुनि राजकी योगवाइ तो मिल

Aho ! Shrutgyanam

नही शकती । उस वक्त उन्होंने साधु धर्म के जानकार और धर्म के रहस्य के भी ज्ञाता किसी नौकरको थोडे अरसे के लिये साधुका वेष पहना कर मंत्री राजके सामने बुलाया, साधुको देख उसे गौतमावतार मान कर अशक्तिकी हालतमें भी मंत्रीको इतना हर्ष हुआ कि–वह उठ कर उस कल्पित मुनि के पाओंमें जा गिरा । और सारे जन्मके किये पापोंकी निन्दा आलोचना कर सद्गतिको प्राप्त हुआ । उस कल्पित साधुने जब देखाकि राज मान्य मंत्री मेरे पाओंमें पडा है तो उसे उस मुनि वेषपर बडा सद्भाव आया । उसने उस वेशको न छोड गिरिनार पर्वतपर जाकर साठ उपवासोंका अनशन कर अपना कार्य साध लिया.

मंत्रीके अंत्य कार्यको करके पाटन आये हुए उन लोगोंसे पिताकी मृत्यु सुन कर लडकोंने असीम दुख मनाया और निज पिताको ऋण मुक्त करने के लिये–बाहडने शत्रुंजय उद्धार कराया और अंबडने गिरिनारकी पौडियें बंधाई (देखो मेरा लिखा कु. पा. च. हिन्दी । बाहडने–शत्रुंजय और

Aho ! Shrutgyanam

समली विहारका उद्धार कराया—इसका वि. व. भी कु. पा. च. से ज्ञात हो सकता है.)

सुना जाता है कि—कुमारपाल गिरिनार तीर्थ पर गये—परंतु रास्ता विषम होनेसे वह यात्रा न कर सके। राज सभामें उन्होंने एक समय यह प्रश्न किया कि गिरिनार तीर्थपर पौडियें बनानेका हमारा मनोरथ कौन पूरा कर सकता है? इस पर किसी कविने आम्रभट्टकी बडी योग्यता—धर्म निष्ठा—क्रियाकुशलता—संसारविरक्तता—शासनप्रियता आदि गुणोंका परिचय कराकर कहा "धीमानाम्रः स पद्यां रचयतुमचिरादुज्जयंते नदीश्वः" (देखो द्रौपदी स्वयंवर नाटक)

उवदेश तरंगिणीमें बाहड मंत्री—जोकि अंबडका भाइ था उसके द्वारा इस कार्यका होना लिखा है.

यतः

" त्रिषष्टिलक्षद्रम्माणां,
गिरिनारगिरौ व्ययात् ।
" भव्या वाहड देवेन,

Aho ! Shrutgyanam

पद्या हर्षेण कारिता ॥१॥

सुना जाता है कि, एक दिन भट्टारक श्री हीर विजयसूरिजीको गुरु महाराजकी तर्फसे एक पत्रमिला- उसमें लिखा हुआ था कि इस पत्रको पढकर तुरत विहार करना। उस दिन श्री विजय हीरसूरिजीके बेलेकी तपस्या थी तोभी गुरु महाराजकी आज्ञाको मान देकर फौरन विहार किया और-पारणाभी गामसे बाहिर जाकर किया!! संघने यह भक्ति राग-और गुर्वाज्ञाका सन्मान देखकर एक आवाजसे श्री जिनशासनकी और शासनाधार सूरिजीकी प्रशंसा की।

उसी विनयका यह फल था कि वह मुस्लमान बादशाह अकबरको अपना परमभक्त बनाकर उससे अहिंसा धर्मकी प्रवृत्ति करा सकेथे। और अपने लगाये दया धर्मके अंकुरोंको महान् सफलताओंके रूपतक पहुंचाने वाले-अर्थात्-अकबर बादशाहके निखिल राज्यमें वर्षभरमें ६ महीने तक जीवदया पलानेवाले विजयसेनसूरि शान्ति चंद्र- और भानुचंद्र जैसे भक्त और समर्थ शिष्योंको

Aho ! Shrutgyanam

तयार कर अपने सर्वांश परमभक्त परिवारकी शोभाको बढा सकेथे। और बादशाहकी तर्फसे आग्रह पूर्वक दिये हुए "जगद् गुरु" बिरुदको पाकर जिनशासन सुरतरुकी शीतल छाया नीचे सहस्त्रों नही बल्कि लाखों मनुष्योंको शान्तिपूर्वक बैठा सकेथे। आप अढाई हजार साधु साध्वियोंके मालिक थे। पितातुल्य पुत्र प्रायः संसारके भाग्यवानों के कुटुम्बोंमें देखे जाते हैं।

आचार्य श्रीविजयसेनसूरिभी बडे प्रभावक आर समर्थ थे। योगशास्त्रके आद्य श्लोकके सातसौ अर्थ करनेकी प्रतिभा इनकी हीथी। जैसी जगद्गुरु महाराजकी अपने गुरु विजयदानसूरिजीके प्रति भक्ति थी वैसीही विजयसेनसूरिजीकी अपने गुरु श्री विजय हीरसूरिजीके प्रतिथी। पंजाब देशके पाटनगर "लाहोर" में आपके दो चौमासे हुए। दूसरे चउमासेमे आपको समाचार मिलाकि–आपके गुरु महाराज सखत बीमार हैं! तब आपका मन घबरा उठा। अपने गुरु महाराजके अंतिम दर्शनोंके लिये आपने वहांसें विहार किया। बडे शीघ्र प्रयाणसे आप

Aho ! Shrutgyanam

अमदावाद तक पहुंचे थे कि–जगद्गुरु महाराजका ऊनामें स्वर्गवास हो गया। आप ऐसे तो आस्तिक थे कि–दशवैकालिक सूत्रका स्वाध्याय किये विना अन्नपानी नही लेते थे। जाप करनेमें आपका वडा लक्ष्य था। सिर्फ नवकार महामंत्रका ही आपने साढे तीन क्रोड जाप किया था। दो हजार साधु साध्वी आपके आज्ञा वर्त्तिथे।

त्याग वृत्ति तो आपकी इतनी उत्कृष्ट थी कि–जैन धर्ममें प्रसिद्ध छ विगइयोंमेंसे दूसरी विगइ आप एक दिनमें कभी नहीं लेतेथे। अर्थात्–प्रतिदिन पांच विगइयोंका त्याग कर फक्त एकही विगइसें शरीरयात्रा चलाते थे!!!

इस आपके विशुद्ध उच्च जीवनका जैन जाति पर तो पडे उसमें आश्चर्य नहीं बल्कि जहांगीर बादशाह पर बडा प्रभाव पडा था श्री शत्रुंजय और गिरनार पर आपको उत्कृष्ट भक्ति राग था। वि. वर्णनकेलिये देखो ऐतिहासिक (सज्झायमाला भाग १ ला।)

जहां अनेक जिनमंदिर पासपासमे हों उस

Aho ! Shrutgyanam

स्थान (प्रायःशिखर) कों टूंक शब्दसें बुलाया जाता है। ऐसी टुंके श्री सिद्धाचलजीपर नव प्रसिद्ध हैं। गिरनारजीपर कितनी टूंके हैं? किस किस टूंकपर जिनमंदिर जिनप्रतिमाजी हैं? इस विषयका पुष्ट-प्रसिद्ध प्रमाण इसवक्त हमारे पास मौजूद नही। तथापि-गिरिनार महात्म्यके लेखकने जिन जिन टूंकोंके नाम लिखें हैं-उन महान् शासन प्रभावक, और शासनप्रेमियोंके नाम हमभी दिङ्मात्र लिख देते हैं। वाचकोंकों जहां कहीं गलती मालूम दे स्वयं सुधारकर वांचे, और-हमे सुधारनेकी सूचना दें, ताकि-किसी अन्य लेखमें उस सूचनाका सुधारा किया जाय।

टूंक-वस्तुपाल-तेजपाल मंत्री.

गुजरात देशमें-वल्लभीपुर-पंचासर-पाटण-और धौलकामें-चावडा-चौलुक्य (सोलंकी) और वाघेलावंशीय राजाओंका राज्य करना प्रसिद्ध है। वाघेलावंशके राजा वीरधवलके अमात्य वस्तुपाल-

Aho ! Shrutgyanam

और उसका छोटा भाई तेजपाल दृढ जैनधर्मी थे। इन्होने १२ दफा बडे समारोहके साथ श्रीशत्रुञ्जय तीर्थकी यात्रा कीथी। तेरवींवार श्री शत्रुंञ्जयतीर्थकी यात्रा करनेको जा रहेथे कि-रास्तेमें काठियावाड प्रान्तमें लींबडीके पास "अंकेवाली" गाममें वस्तु-पाल देवगत होगए। वस्तुपालके बनवाये आबुके जन मंदिरोंको देखनेके लिये सहस्रों कोसोंसे लोग आते हैं। अंग्रेज लोग फोटो उतार २ ले जाते हैं।

गुजरातके प्रभावशाली राजा भीमके प्रधान मंत्री विमलशाहने अगणित द्रव्य खर्चकर यहां जैन मंदिर बनवायाथा और उस मंदिरमें महाराजा संप्रतिके समयकी मूर्त्ति पधराकर विक्रम संवत् १०८८ मे प्रतिष्ठा करवाईथी।

उस मंदिरको देखकर महामंत्री वस्तुपालने शोभन नामक कारीगर (जो कि-उसवक्त सूत्रधा-रोंमे आला दरजेका हुश्यार समझा जाताथा) उसकों वैसाही मंदिर बना देनेका फरमान किया शोभनने अपनी मातहदके २००० कारीगरोंकों लगाकर अपनी निगाहबानी रखकर विमलशाह

Aho ! Shrutgyanam

शेठके बनवाये मंदिरके ठीक मुकाबलेका मंदिर तामीर कर दिया। मंदिर क्या बनाया? मानो-स्वर्गका विमान नीचे उतारकर रख दिया है। आज भी देखकर दिल खुश खुश हो जाता है। जैसा विमल-शाह शेठका बनवाया मंदिर अवर्णनीय शोभाशाली है वैसाही वस्तुपाल तेजपालका मंदिरभी निहायत लायक तारीफ-और-अकलीम है। छत्तोंमे-रंगमंडपमें और-मेहराबोंमें ऐसी ऐसी कारीगिरी की है कि-जिसका बयान जुबानसें नहीं किया जा सकता! जो जो वेलबूटे-कमलफूल-पुतलियां-गुलदस्ते बनाये हैं अच्छे अच्छे दीमागवाले कारीगर देख देखकर ताज्जुब होते हैं।

वस्तुपालके बनवाये मंदिरकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् १२८९ फाल्गुन सुदि ८ को हुईथी। यहां भेंसा शाह शेठका बनवाया मंदिर भी संसार भरमें दृष्टान्त भूत है परंतु हमारा मतलब वस्तुपालके बनवाये मंदिरसें ही है, क्योंकि हम वस्तुपालके सत्कार्योंका वर्णन कर रहे हैं.

वस्तुपाल तेजपाल चरित्र। कीर्त्तिकौमुदी-

Aho ! Shrutgyanam

सुकृतसंकीर्त्तनकाव्य। इन ग्रंथोमें महामात्यके किये धार्मिक–नैतिक-स्वकल्याण–परकल्याण के कार्यों-का सविस्तर वर्णन है.

महा अमात्य–वस्तुपाल तेजपाल के किये शुभ कार्योंका संक्षिप्त वर्णन.

(१३१३) नवीन जिनमंदिर कराये।
(३३००) जिन चैत्योंका जीर्णोद्धार कराया।
(३२००) जैनेतर मंदिर बनवाये।
(५५०) ब्रह्मशाला।
(५०१) तपस्वि लोगोकी जगह तयार कराई।
(५००) दान शालायें कराई।
(९८४) धर्मशाला (उपाश्रय) बनवाये।
(३०) कोट तयार कराये।
(८४) सरोवर खोदाये।
(४६४) वापी–बौली।
(१००) जैन सिद्धान्तोके भंडार किये।

Aho ! Shrutgyanam

देश और धर्मकी रक्षा के लिये ६३ संग्राम किये ।

(१३) तीर्थ यात्राएँ की ।

(४००) पानी पीनेके स्थान बनवाये ।

जहां छाण कर पानी पिलाया जाता था

स्थंभनपुरमें विचित्र युक्तियुक्त विविध रचना विशिष्ट (९) तोरण करवा ये जिनका निर्माण पाषाणसे हुआ हुआ था ।

(१०००) तपस्वियोंको उनकी योग्यताके अनुसार वर्षासन कायम कर दिये ।

वास्तु कुंभ वगैरह क्रिया के करनेवालोंको भी (४०८४) वर्षासन बंधा दिये कि जिससे आनंदपूर्वक उनका निर्वाह होवे ।

अन्यान्य ग्रंथोंमें इनके सत्कार्योंको और तरहसे भी वर्णित किया है अर्थात् किसी किसी वस्तुका प्रमाण ज्यादा कमती भी लिखा है ।

[देखो वस्तुपाल चरित्र श्री जैनधर्म प्रसारक सभा द्वारा मुद्रित]

Aho ! Shrutgyanam

[विशेष परिचय–वस्तुपाल तेजःपाल]

शहर पाटणमे पोरवाड जातीमें अनेक जगत् प्रसिद्ध–उदार–गंभीर परोपकार परायण–नरपुंगव होचुके हैं। इस जातिमें आसराज नामके एक प्रसिद्ध मंत्री थे उनका आबु मंत्रीकी कुमारदेवी नाम कन्यासे व्याह हुआ था. चौलुक्य राजाओंकी ओरसें उन्हे गुर्जरदेशान्तर्गत " सुंहाला " गाम बक्षीस था. आसराज कुछ अरसा पाटणमें रहकर पीछे सुहाले रहने लगे, वहां उनकों कितनीक संततिका लाभ हुआ. उन सब संतानोमें वस्तुपाल तेजपाल उनके प्रधान और अति प्रिय लडके थे। सुंहाला गाममें आसराजका स्वर्गारोहन हो गया तब वस्तुपाल–तेजपाल अपनी पूज्य माताकों साथ ले कर वढियार देशकी सीमाके गाम–मांडलमें चले गये। वहां कुछ अरसे तक रहनेसें प्रजाका उनपर बडा प्रेम बढा। परंतु " अनित्यानि शरीराणि " यह सिद्धान्त तो त्रिलोकी भरमें व्याप्त है। कुछ अरसे के बाद अनेकानेक धर्म क्रियाओं द्वारा अपने मानव जीवनकों सफल और समाप्त कर मांडलमें ही कु-

Aho ! Shrutgyanam

मार–देवीभी देव गत हो गई। मातापिताके अति असह्य वियोगसें विधुरित मंत्रीराज अल्प नीरस्थ मीनकी तरह–आकुलव्याकुल हुए हुए दिन गुजार रहे थे कि श्रावण के मेघकी तरह धर्म नीर के वरसानेवाले श्री नयचंद्र सूरिजी ग्रामानुग्राम विचरते हुए मांडल पधारे मंत्री प्रभृति श्रद्धालु लोगोंको सूरि राजका पधारना बडा लाभकारी हुआ कुछ दिनो तकके गुरु महाराज के संयोगसें दोनो भाइयोंका मन स्थिर हो गया। और प्रथमकी तरह वोह धर्म क्रियामें प्रवृत्ति करने लगे।

वस्तुपालकी ललिता देवी और तेजःपालकी अनुपमादेवी स्त्री थी जोकि–निहायत सुरूपा एवं सुशीलाथी. उन दोनोमें–दान देना–देवगुरुकी भक्ति करनी–धर्माराधन करना और त्रिविधयोगसें अपने अपने प्राणनाथ पतिकी भक्तिका करना-यह अनन्य साधारण और लोकप्रिय गुण थे।

नयचंद्रसूरिजी निमित्तशास्त्रमे बडे ही प्रवीण थे। उन्होने उन भाग्यवानोंका भावि महोदय देखकर श्री सिद्धाचलजीकी यात्रा करनेका–अर्थात् श्री

Aho ! Shrutgyanam

शत्रुंजय महातीर्थ के संघ काढनेका उपदेश दिया। अमात्य संघ लेकर पालीताणे गये आचार्य महाराजके सतत परिचयसें उनकी धर्म भावना और भी परिपुष्ट हो गई।

जब वह लौट कर पीछे आये तब गुर्जर पति वीरधवलने उन्हे अपने मंत्री पदपर प्रतिष्ठित कर लिया।

अनेक इतिहासकार लिखते हैं-कि-वनराजके पिता जयशिखरी के मारनेवाले कन्नोजके राजा-भूवडने गुजरातकी राजधानी-जयशिखरी के मरनेके बाद अपनी लडकी मिल्लण देवीकी शादी के वक्त उसे उसके दायजेमें दे दीथी, मिल्लण देवी यावज्जीव तक गुजरातकी आमदनी खाती रही अंत्यमें मर कर उसी अपनी पूर्वभवकी इष्ट राजधानीकी अधिष्टायक देवी हुई। उसने भाविकालमें म्लेच्छोंके आक्रमणसें गौर्जर प्रजाकों बचाने के लिये वीरधवलकों स्वप्नमें आकर-वस्तुपाल तेजपालकों अपने अमात्य बनानेका उपदेश किया।

Aho ! Shrutgyanam

" सुकृतसंकीर्त्तन " काव्यमें लिखा–है कि–कुमारपाल राजाने अपने राज्य–वंशधरोंकी और पूर्वकालमें पुत्रसम पालनकी हुई गुर्जर भूमीकी म्लेच्छोसें रक्षा कराने के लिये–देव भूमिसें आकर वीरधवलको उपदेश किया कि–राजधानीकी रक्षाके लिये इन भाग्यवानोंकों अपने मंत्री बनाओ। मतलब इतना तो उभयतः सिद्ध है कि देवकी सहायतासे वस्तुपाल बंधु सहित मंत्री पदपर प्रतिष्ठित हुए।

मंत्रियुग्मने–दानशाला–धर्मशाला पौषधशाला–पाठशाला–वांचनशाला गौशाला–स्त्रीपुरुषोंकी शिक्षणशाला वगैरह हजारों लाखो धर्मकार्य कर कराकर इस मानव जीवनको सफल किया। मेरे पास " गिरिनार तीर्थोद्धार प्रबंध " नामका एक प्राचीन पुस्तक है, उसमें 'रत्न' श्रावक के किये श्री गिरिनारतीर्थ के उद्धारका वर्णन है और प्रसंगसें वस्तुपाल तेजपालके किये सत्कार्योंकी नामावली है उससें और कीर्तिकौमुदिसें एवं " फार्बस साहिब " की बनाई रासमालासें वस्तुपालकी बहुत अपूर्व चर्याका अवबोध

Aho ! Shrutgyanam

होता है। वस्तुपालने जैसे आबु तीर्थपर मंदिर बनवाये थे ऐसे गिरिनारपर जो जिन मंदिर बनवाये हैं उनको " वस्तुपाल तेजपालकी टूंक " कहते हैं इस टूंकमे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा है और उस प्रतिमाजीकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत्-१३०६ में आचार्य श्री प्रद्युम्न सूरिजी के हाथसें हुइ है। वस्तुपाल चरित्रके छठे प्रस्तावमें कितनेक धर्म स्थानोके नाम भी दिये हैं जोकि इन दोनो मंत्रियोंने गिरिनारपर तयार कराये थे-इन भाग्यवानोंका यह सिद्धान्त थाकि-" सति विभवे संचयो न कर्त्तव्यः" किसी फारसी शायरने लिखा है-" बराय निहादन च संगोचजर "] जो दौलत एकठी करके जमीनमें डाली जाती है उसकी अपेक्षा पत्थर अच्छे, क्योंकि-जब जरूरत पडेगी पत्थर तो किसी काम आ जावेंगे, मगर यह दौलत जो जमीनमें गाडरखी है किसी दरकार न आयगी.

Aho ! Shrutgyanam

वस्तुपाल तेजपालके गिरिनारपर बनवाये धार्मिक स्थानोंकी नामावली-

" वस्तुपाल विहार " नामका श्री आदीश्वर भगवानका विशालमंदिर । आदीश्वर प्रभुकी प्रतिमा । श्री अजितनाथ श्री वासुपूज्य-स्वामीकी प्रतिमायें । अंबिका माताकी मूर्त्ति । चंडप नामक अपने प्रपितामह-परदादाकी मूर्त्ति । श्री वीर परमात्माकी प्रतिमा । वस्तुपाल और तेजपालकी दो मूर्त्तियें । अपने पूर्वजोंकी मूर्त्तियोंके साथ श्री सम्मेतशिखरकी रचना । अपनी माता-कुमारदेवी, और-अपनी बहिनकी मूर्त्तियों सहित श्री अष्टापदजीकी रचना कराई । तीनही मुख्य मंदिरोंपर तीन कीमती तोरण बंधाये । श्री शत्रुंजय तीर्थ के रक्षक गोमुख यक्षका मंदिर बनवाया । हाथीकी सवारी सहित माताकी मूर्त्ति । श्री नेमिनाथ स्वामी के चैत्यके तीनही दर्वाजोंपर बहुमूल्य तोरण-बंधाये । उसमंदिरके-दक्षिण उत्तर विभागोंमें पिताकी और दादाकी मूर्त्तियें बैठाई ।

Aho ! Shrutgyanam

अपने पूज्य माता-पिताके कल्याण के लिये श्रीशान्तिनाथ स्वामी–श्री अजितनाथ स्वामीकी कायोत्सर्गस्थ दो मूर्त्तियें स्थापन कराइं। मंदिरके मंडपमें –भव्य–मनोहर इन्द्र मंडप बनवाया–श्री नेमिनाथ स्वामीकी मुख्य प्रतिमा सहित–अपने पूर्वजोंकी मूर्त्तियोंवाला दर्शनीय मुखोद्घाटनक स्थंभ कराया। अपने पिता आसराज की और दादा सोमराजकी घोडेसवार मूर्त्तियें करवाई। अपने पूर्वजोंकी प्रतिकृतियोंके स.थ सरस्वती माताकी मूर्त्ति आर देव कुलिकाएँ तयार कराई।अंबिका माता के मंदिर के आगे विशाल मंडप बनवाया। अंबिका माताकी मूर्त्तिका परिकर तयार कराया।

परम तेजस्वी तेजपालने अपने कल्याण वास्ते कल्याणत्रितय नामका श्री नेमिनाथ प्रभुका चैत्य–संगमरमरकी सुफेद फटिक जैसी शिलाओंसे बंधाया, और उस मंदिर के शिखरपर–सातसा चौसठ गद्याणे सुवर्णका कलश चढाया। और भी अनेक मूर्त्तियें भराई। प्रपाएँ लगवाई। भगवत् प्रतिमाओंकी पूजाके लिये पुष्प वाटिकाएँ

Aho ! Shrutgyanam

लगवाई इत्यादि सत्कार्य कि जिनका विस्तार कर-
नेमें एक बडा ग्रंथ तयार हो सक्ता है.

टूंक-संग्राम सोनी-

आचार्य बुद्धि सागरजीने " जैनोकी प्राचीन-अर्वाचीन स्थिति " नामक पुस्तकमें वनियोंके ८४ गोत्र लिखे हैं. उसमें सोनी गोत्रका भी उल्लेख है. आज भी इस गोत्रके लोग मंदसोर मालवामें गुजरात के कितनेक शहरोंमें, काठियावाड के जेतलसर आदि गामोंमें विद्यमान हैं ।

मुनि विद्याविजयजी संशोधित-ऐतिहासिक-सझायमाला नाम ग्रंथमें लिखा है कि-सोम सुंदर सूरि के उपदेशसें मांडवगढ के रहीस संग्राम सोनी-ने अनेक धर्मकार्य किये थे. आचार्य महाराजकों मांडवगढमें चौमासा कराकर उनसें पंचमांग श्री भगवती सूत्र सुनना शुरु किया था-जहां जहां गो यमा ! यह पद आता था संग्राम सोनी एक सुवर्ण मुद्रा (सोनामोहर) भेट किया करता था. छत्रीस

Aho ! Shrutgyanam

हजार जगह उसने उतनी ही अशरफियें भेट रख कर संपूर्ण भगवती सूत्र सुना । अठारां हजार उसकी माताने । नौहजार उसकी स्त्रीने इस प्रकार एक कुटुंबके ३ श्रद्धालुओंने ६३००० मोहरें चढाई थी । उस ज्ञान द्रव्यमें १ लाख ४'१००० सोने मोहरे और भी मिला कर वह सब रकम उन्होने सोनहरी अक्षरेंासे कल्पसूत्र-और कालिकाचार्य कथा की प्रतियोंके लिखानेमें लगाई थी ।

यह महान्-प्रशस्यकार्य उन्होने विक्रम संवत् १४७१ में किया था । और प्रतियों वांचने पढने योग्य बडे बडे ज्ञान भंडारोमे रख दीथो । तपगतछाचार्य श्री सोम सुंदर सूरिजोका जन्म-वि. सं. १४३० माघ वदि १४ के दिन पालणपुर (गुजरात) में सज्जन शेठकी माल्हण दे नामक स्त्रीसें हुआ था. सूरिजीने सिर्फ ७ ही वर्षकी उमरमें श्री 'जयानंदसूरिजी के पास दीक्षाली थी । १४५० में वाचक पद-और १४५७ में इनकों आचार्यप दमिला था ।

[इस आचार्य भगवान् के--परिवार के परि-

Aho ! Shrutgyanam

चय के लिये--मेरे लिखे "दान कल्प द्रुम" के संस्कृत उपोद्घातको देखनेकी जरुरत है)
गिरिनार माहात्म्यके लेखक मि. दौलतचंद बी. ए. ने जेम्स बर्जसका प्रमाण लिखकर संग्राम सोनीकों दिल्लीपति बादशाह अकबरका समान कालीन बतानेकी कोशिश की है और लिखा है कि संग्राम सोनी शहर पाटणका रहनेवाला था बादशाह अकबरका बडा सन्मान पात्र था, इतनाही नही बल्कि शहनशाह अकबर संग्रामकों "चचा" कहकर बुलाया करता था। इसमे सत्य गवेषणाके लिये उनके लिखाये ग्रंथ—और उनकी भराई जिन प्रतिमाओंके लेख ही बस हैं.

देखिये संग्राम सोनीके विषयमें पूर्वाचार्य क्या लिखते हैं।

श्री उदयवल्लभसूरीश्वरपट्टे श्री ज्ञानसागरसूरि-गुरवः कथं भूताः ? सत्यार्थाः, श्री विमलनाथचरित्र प्रमुखानेकनव्यग्रन्थलहरीप्रकटनात् सार्थकाह्वा येषां

Aho ! Shrutgyanam

श्री ज्ञानसागरसूरीणां मुखात् मंडपदुर्गनिवासो व्यवहारिवर्यः पातशाहि श्री खलची महिम्मद ग्यास दीन सुरत्राण प्रदत्त नगदलमलिक बिरुदधरः साधु श्री संग्राम सौवर्णिक नामा सद्वृत्तिकं श्री पंचमांगं श्रुत्वा गोयमेति प्रति पदं सौवर्णटंककममुचत् । षट्त्रिंशत्सहस्र प्रमाणाः सुवर्णटंककाः संजाताः । यदुपदेशात्तद् द्रविणव्ययेन मालवके मंडपदुर्गप्रभृति प्रतिनगरं गुर्जरधरायामणहिल्लपुरपत्तन-राजनगर-स्तंभतीर्थ-भृगुकच्छप्रमुखं प्रतिपुरं चित्कोशमकार्षीत् । पुनर्यदुपदेशात्सम्यक्त्व स्वदारसंतोषव्रतवासितान्तःकरणेन वन्ध्याम्रतरुः सफलीचक्रे । तथाहि-

एकस्मिन् समये सुरत्राणो वनक्रीडार्थमुद्यानं जगाम । तत्रैको महाम्रतरुर्दृष्टः । श्री शाहिस्तत्र गन्तुमारब्धः । तदा केनचित्प्रोक्तं महाराज नात्र गंतव्यमयं वन्ध्य वृक्षः ! तदा शाहिना प्रोक्तमेवं चेत्तर्हि मूलादुच्छेद्यमेवं । तदा संग्राम सौवर्णिकेनोक्तं, स्वामिन्नयं वृक्षो विज्ञपयति यद्यमागामिकवर्षे न फलिष्यति तदा स्वामिने यद्रोचते तत्कर्तव्यमिति । पुनः शाहिना प्रोक्तमत्राचि-

Aho ! Shrutgyanam

कारेकः प्रतिभूः ? संग्रामसौवर्णिकेनोक्तमहमेव शा-हिनोक्तं त्वं प्रतिभूःपरं यद्ययं न फलिष्यति तदा तत्र किं कर्तव्यम् ? साधुनोक्तं यदस्य वृक्षस्य क्रियते तन्ममेति श्रुत्वा श्रीशाहिना आत्मीयास्तत्र पंच नराः स्थापिताः। तेषामुक्तं नित्यं विलोकयमयमाम्रस्य किं करोति। अथ संग्रामसौवर्णिकस्तत्रनित्यमा-गत्य स्वपरिधानवस्त्रांचलप्रक्षालनजलेन तमाम्रं सिं-चतिस्म, वक्ति च, अहो आम्रतरो ! यद्यहं स्व-दारसंतोषव्रते दृढचित्तोऽस्मि तदा त्वयाऽन्या-म्रेभ्यः प्रथमं फलितव्यं नान्यथेति। एवं षण्मासं या-वत् सिक्तः। इतश्च वसन्तऋतुरायातः तदा पूर्वमयमाम्रः पुष्पितः फलितश्च। तत्फलानि सौवर्णिकसंग्रामेन श्री शाहेः पुरो ढौकितानि। श्री शाहिनोक्तं कानी-मानि फलानि ? श्री साधुनोक्तं तद्वन्ध्याम्रस्य इति श्रुत्वा श्री शाहिना भृशं नराः पृष्टाः तैर्यथावृत्तं सर्वं निगदितं, तत् श्रुत्वा परमचमत्कारप्राप्तेन श्री शाहिना अनेकनररत्नभूषितायां सभायां सर्वजन-समक्षं भृशं संग्रामसौवर्णिकः प्रशंसितः सप्त कृत्वः परिधापितश्च। अत्युत्सवपुरःसरं गृहे प्रेषितः। ततः

Aho ! Shrutgyanam

सर्वत्र संग्रामसौवर्णिकस्य यशः प्रससार । असौ संग्रामसौवर्णिकः षड्दर्शनकल्पतरुरभूत् तद्यथा गु-र्जरधरा निवासी कश्चिदाजन्मदरिद्रो विप्रः संग्राम सौवर्णिकं दानशौण्डं श्रुत्वा मंडपदुर्गमाजगाम, तत्र व्यवहारि सभायां स्थितस्य संग्राम सौवर्णिकस्य सन्निधमित्याय दत्ताशीर्वादस्तत्र स्थितः । सौवर्णि-केनोक्तं द्विजराज ! कुतः समागतं ? तेनोक्तं क्षीर-निधेर्भृत्योऽस्मि, तेन भवन्नामांकितं लेखं दत्वा प्रेषितोऽस्मि । व्यवहारिभिरुक्तं देहि लेखं वाच-यस्वेति च तेनोक्तं—तद्यथा " स्वस्ति प्राचीदिग-न्तात्प्रचुरमणिगणै र्भूषितः क्षीरसिन्धुः क्षोण्यां सं-ग्रमरामं सुखयति सततं वाग्भिराशीर्युताभिः । लक्ष्मीरस्मत्तनूजा प्रवरगुणयुता रूपनारायणस्त्वं, कीर्त्तिर्नासक्तिभावा तृणमिव भवता मन्यते किं व दामन् ॥ २॥ इति श्रुत्वा संग्राम सौवर्णिकः सर्वांगा भरणयुतलक्षदानं ददौ । ततो विप्र इतस्ततो वि-लोकितुं लग्नः । तदा व्यवहारि भिरुक्तं किं विलो कयसि ? तेनोक्तमाजन्ममित्रं दारिद्र्य विलोकयामि, हा मित्र क्व गतोसीति कृत्वा पूत्कार । पुनरुक्तं हुं ज्ञातं

Aho ! Shrutgyanam

सभ्याः श्रूयतां–" यो गंगामतरत्तथैव यमुनां यो न-र्म्मदां शर्म्मदां, का वार्ता सरिदम्बुलंघनविधेर्यश्चार्णवं तीर्णवान् । सोऽस्माकं चिरसंचितोपि सहसा श्री रूपनारायण ! त्वद्दानांबुनिधिप्रवाहलहरीमग्नो न संभाव्यते ॥ २ ॥" इति श्रुत्वापि श्री सौवर्णिकः पुनर्लक्षं दापितवान् । [वृद्ध पौशालीय पट्टावली]

श्री उदय वल्लभ सूरिके पट्ट पर श्री ज्ञान सागर सूरि गुरु हुए, जो कि सत्यार्थ थे और जिन्होंने श्री विमलनाथ चरित्र, आदि अनेक नवीन ग्रन्थ समूह के प्रकट करनेसे अपने नामको सार्थक किया था । जिन श्री ज्ञानसागर सूरिके मुखसे–बादशाह श्री खिलची महिम्मद ग्यास दीन सुलतानकी दी हुई नगदलमलिक पदवीको धारण करनेवाले, मांडवगढ के निवासी तथा व्यवहारियोंमें श्रेष्ठ शाह श्री संग्राम सोनीने वृत्ति सहित श्री पञ्चम अङ्ग भगवती) को सुनकर " गोयमा " इस प्रत्येक पद पर सुवर्णकी मुद्राएँ रखी थी इस प्रकार छतीस सहस्र सुवर्णकी मुहरें हो गईं, और जिनके उपदेशसे (उन्होंने) उस द्रव्य के व्ययके द्वारा

Aho ! Shrutgyanam

मालवा देशमें मांडवगढ आदि प्रत्येक नगरमें तथा गुजरात भूमिमें अणहिलपुर पाटन अहमदाबाद, खंभात तथा भरुच आदि प्रत्येक नगरमें ज्ञानभंडार करवाये। फिर जिनके उपदेशसे सम्यक्त और स्वस्त्री सन्तोष व्रतसे विशुद्ध मन हो कर जिन्होंने फल न देनेवाले आम्र वृक्षको सफल किया। देखो।

किसी समय सुलतान वनक्रीडा के लिये उद्यानमें गये, वहां उन्होंने एक वडे आम के वृक्षको देखा, बादशाह जब वहां जाने लगे तो किसीने उनसे कहा कि महाराज ! वहां मत जाइये, क्योंकि यह वृक्ष निष्फल है, तब बादशाहने कहा कि—यदि यह बात है तो इस (वृक्ष) को मूलसे ही कटवा डालो, तब संग्राम सोनीने कहा कि—हे स्वामी ! यह वृक्ष सूचित करता है कि—यह आगामी वर्षमें फल न देवे तो स्वामीको जो अच्छा लगे सो करें, फिर बादशाहने कहा कि—इस काम के लिये जमानत देनेवाला कौन है ? तब संग्राम सोनीने कहा कि—मैं ही हूं, बादशाह बोला कि—तुम जुम्मेवार तो हो परन्तु यदि यह वृक्ष फल न देगा तो तुम्हारा क्या

Aho ! Shrutgyanam

किया जावेगा ? शाहने कहा कि–जो इस वृक्षका करें वही मेरा भी करें, इस बातको सुन कर बादशाहने वहां अपने मनुष्योंको रखदिया तथा उनसे कह दिया कि–तुम लोग प्रतिदिन देखते रहना कि यह (शाह) आम्र वृक्षका क्या करता है । इसके बाद संग्राम सोनी प्रतिदिन वहां आकर अपने पहिरनेके वस्त्र के धोनेके जलसे उस आम्र वृक्षको सींचने लगा तथा उससे यह भी कहता रहाकि–हे आम्र वृक्ष यदि मैं स्वस्त्री–सन्तोष–व्रतमें दृढ चित्त हूंतो तुमको दूसरे आम्र वृक्षोंसे पहिले फलना चाहिये, नहीं तो खैर । इस प्रकार उसने उस वृक्षको ६ मास तक सींचा और इतनेमें ही वसन्त ऋतु आ गया, तब यह आम्र वृक्ष (और वृक्षोंकी अपेक्षा) पहिले ही फूला और फला संग्रामसोनीने उसके फलोंको बादशाह के सामने उपस्थित–भेट कर दिया, बादशाहने कहाकि–ये किस जागाके फल हैं ? तब शाहने कहा कि–उस आम्र वृक्षके यह फल हैं, इस बातको सुन कर बादशाहने उन मनुष्योंसे सब बात पूछी, तब उन लो-

Aho ! Shrutgyanam

गोंने सब वृत्तान्त यथावस्थित ज्यों कात्यों कह दिया, यह सुन कर श्री बादशाहने अत्यन्त चमत्कृत हो कर अनेक नर रत्नोसे अलङ्कृत सभामें सब लोगोंके सामने संग्राम सोनीकी अत्यन्त प्रशंसाकी, सात वार उनका परिधापन किया अर्थात् सात खिल्लतें सिरोपाव दिये तथा अति उत्सवके साथ उन्हें घर भेज दिया, तदनन्तर संग्राम सोनीका यश सर्वत्र फैला।

संग्राम सोनी षड् दर्शनोंमें कल्पतरुके समान थे, जैसे कि-गुर्जर भूमिका निवासी कोई ब्राह्मण जन्मसे ही दरिद्र था वह संग्राम सोनीको दान शूर सुन कर मांडवगढमें आया और व्यवहारियोंकी सभामें बैठे हुए संग्राम सोनीके पास पहुंचा, आशीर्वाद देकर वहां बैठ गया, सोनीने कहा कि हे विप्रराज! कहांसे आये हो? वह बोला कि-मैं क्षीर समुद्रका नौकर हूं, उसने आपके नामका एक लेख दे कर मुझे भेजा है, सोनीने कहा कि-वांचो, तब उसने लेखको इस प्रकार पढा स्वस्ति प्राची दिशा के अन्त भागसे बहुतसे मणिगणोंसे शोभित

Aho ! Shrutgyanam

क्षीर सिन्धु पृथिवी पर आशीर्वादसे युक्त वचनोंसे निरन्तर संग्रामको सुख देता है। उत्तम गुणोंसे विभूषित लक्ष्मी हमारी पुत्री है और तुम रूप नारायण हो, परन्तु कीर्तिमें आशक्त होनेके कारण आप लक्ष्मीको तृणवत् मानते हैं विशेष क्या कहें॥१॥ यह सुन कर संग्राम सोनीने अङ्कके सब आभूषणों सहित लाख रुपये दिये ब्राह्मण इधर उधर देखने लगा, तब व्यवहारिजनोंने कहाकि—क्या देखते हो ?—बोलाकि—मेरा जन्मसे ही जो मित्र दारिद्र था उसे देखता हूं, हा मित्र ! कहां चले गये ? इस प्रकार कह कर पुकारने लगा, फिर बोलाकि—हां मैंने जान लिया सज्जनों ! सुनो जोगङ्गा और यमुनाको पार कर गया था तथा जो कल्याणदायिनी नर्मदाके भी पार पहुंच गया था, नदियोंके जलके लांघनेकी तो उसकी बात ही क्या है जबकि वह समुद्र के भी पार पहुंच गया था, हे रूप नारायण। वह हमारा चिरसञ्चित भी मित्र आपके दान समुद्रके प्रवाहकी तरङ्गोंमें एकदम इस प्रकार गोता लगा गया है कि मालूम भी नहीं पडता है।

Aho ! Shrutgyanam

इस बातको सुन कर श्री सोनीने फिर उसे लाख रुपये दिलवाये ।

टूंक-कुमारपाल भूपाल.

सभ्य संसारको महाराज कुमारपालका परिचय दिलाना-सूर्यको दीवा दिखानेकी उपमा है. कौन ऐसा मनुष्य है जिसने इतिहासका थोडा बहुतभी ज्ञान प्राप्त किया हो। और कुमारपालसें अपरिचित हो ? परंतु हैं सृष्टिमें ऐसेभी कतिपय मनुष्यकि जिन्होने अपने घरोंकी राम कहानियां सुन सुनही जीवनकों इतिश्री तक पऊंचा दिया है, उन बिचारे प्रायः स्वसांप्रदायिक गोष्ठिप्रिय मनुष्योंकी कर्णग दूरातक इस कीर्त्तिकौमुदिक यशस्वि राजाधिराजकी कथाका अंशभी उपकारी है, यह समझ कर सोलंकी कुल तिलक "उस त्रिभुवनपालक" महामंडलेश्वर-राजा कुमारपालका स्वल्प परंतु सर्व जनोपयोगि शब्दोंमे परिचय दिलाया जाता है.

प्रबंधचिन्तामणिसे पता मिलता है कि वि.सं.११२८ की चैत्र कृष्ण सप्तमी सोमवार हस्तनक्षत्र और नमी

Aho ! Shrutgyanam

लग्नमे कर्णदेव गुजरातकी गादी पर बैठाथा, कर्णदेवकी एक मीनलदेवी नामक राणीथी जोकि कर्णाटकके राजा जयकेशीकी लडकीथी, उसकी कुक्षीसें सिंह स्वप्नसूचित एक लडका जन्माथा उसका नाम उन्होंने स्वप्नानुसार जयसिंह रखाथा. जयसिंहकों कर्णदेवने वि. सं. ११५० पौष कृष्ण तृतीया–शनिवार श्रवण नक्षत्र और वृष लग्नमें सिंहासन पर बैठायाथा. और खुद कर्णराज कर्णावती नयी नगरी वसाकर रहने लगाथा. राज्यारोहणके समय जयसिंहकी अवस्था ३ वर्षकी थी.

कर्णदेवने २९–वर्ष ८ मास–२१ दिन राज्य किया था। सिद्धराज जयसिंहने ११५० में तख्तनशीन होकर ११९९ तक राज्य किया।

सिद्धराज जयसिंहके अवसानका साल संवत् प्रबंधचिन्तामणिकारने नहीं लिखा। यहां हमने जो उल्लेख किया है सो " राजावलि कोष्टक और प्रभावक चरित्रके आधारसें किया है।

Aho ! Shrutgyanam

"द्वादशस्वथ वर्षाणां, शतेषु विरतेषु च ।
एकोनेषु महीनाथे, सिद्धाधीशे दिवंगते ॥

(देखो प्रभावक चरित्र पत्र ३९३.

कुमारपालके गुणानुवाद जैन करें यह तो संगतही है परन्तु जैनेतर लोगोंने भी इस भूपालकी कीर्तिके गायन करनेमें संकोच नही किया । कुमारपाल चरित्र द्वाश्रय जो महाराजा-गायकवाड सरकारकी ओरसे प्रगट हुआ है, उसकी प्रस्तावनामें-सद्गत प्रोफेसर-मणिभाई नभुभाई द्विवेदीने लिखा है कि-"कुमारपालने जबसें अमारी घोषणा "-(जीवहिंसाबंद) की तबसें यज्ञयागमें भी मांस " बलि देना बन्द हो गया, और यव तथा शालि " होमनेकी चाल शुरु हो गई । लोगोंकी जीव " उपर अत्यन्त दया बढी । मांसभोजन इतना-" निषिद्ध हो गया कि-सारे हिन्दुस्थान (बंगाल " -पंजाब-इत्यादि एक, या दूसरे प्रकारसे थोडा " बहुत भी मांस हिन्दु कहलानेवाले उपयोगमें " लाते हैं परन्तु गुजरातमें तो उसका गंध भी लग

Aho ! Shrutgyanam

" जाय तो झट स्नान करने लगजाते हैं । ऐसी
" वृत्ति लोगोंकी उस समयसें बांधी हुई आज प-
" र्यंत चली जा रही हैं).

(देखो कुमारपाल चरित्र हिन्दीकी—और कुमारपाल द्वाश्रयकी प्रस्तावना).

राजस्थानके कर्ता—कर्नल—टोड—साहिबकों चित्तौडके किलेमें राजा लक्ष्मणसिंहके मंदिरमें एक शिलालेख मिला था. जो कि—संवत १२०७ का लिखा हुआ था उसमें महाराज कुमारपालके वियमें लिखा है कि—महाराजा कुमारपालने अपने प्रबल प्रतापसे सब शत्रुओंकों दल दिया जिसकी आज्ञाकों पृथ्वीपरके सब राजाओने अपने मस्तकपर चढाईथी। जिसने साकंभरी पतिको अपने चरणोंमें नमाया था। जो खुद हथियार पकडकर सपादलक्ष (देश) तक चला गया था. सब गढ पतियोंको नमाया. था सालपुर (पंजाब) कों भी वश किया था।

(वेस्टर्न इंडिया टाड कृत)

फारबस साहिबने कितनेक कुमार पालके समयके

Aho ! Shrutgyanam

लेखोंका उतारा लिया है जिसमें एकतो–मारवाड देशमें "बाहडमेर" गांवके ताबे 'हाथमोनीनामक गामसें थोडी दूरीपर "केराडु" गाम है, जोकि–बाडमेरसें थोडेसे कोसके फांसले पर है वहां जीर्ण मंदिरोंके और घरोंके खंडेरोमेंसे अनेक शिलालेख मिलते हैं मंदिरके एक थंभे पर–संवत् १२०९ माघ कृश्न चतुर्दशी–शनिवार का लिखा कुमारपालके समयका लेख मिला है " उसमे कुमारपाल के सत्ता समयमे अभय दान दिलानेका अधिकार है जो कि–अष्टमी–एकादशी–चतुर्दशी इन ३ दिनोके वास्ते ३ गामेमें अमारी फैलानेका सूचक है लेख लंबा होनेसें यहां अक्षर अक्षरका उतारा न करके सूचना मात्र दी गई है।

जोधपुर के राज्यान्तर्गत ' रत्नपुर ' कोइ कसबा है उस गामकी पश्चिम दिशामें शिव मंदिरके घुंमटमें एक शिला लेख है " उसमे " समस्त राजविराजित–महाराजाधिराज–परम भट्टारक–परमेश्वर निज भुज विक्रम रणांगण विनिर्जित..........

Aho ! Shrutgyanam

.... पार्वती पति वर लब्ध प्रौढ–प्रताप–श्री कुमारपाल देव–कल्याण विजय राज्ये इत्यादि विशेषणोंसें सुशोभित लंबा चौडा लेख है और उसमे अमुक राजाकी राणीकी तर्फसें फरमान है कि अमुक–अमुक तिथियोंकों किसीने जीव हिंसा नही करनी अगर कोई जीव हिंसा करेगा तो उसकों ४ द्रम्म–(अशर्फियें–) दंड किया जावेगा.

देखो–फार्बस साहिबकी बनाई रासमाला खंड पहला पृष्ठ–३०१–३०२.

इस भूपालने जैसे शत्रुंजयतीर्थपर–तारण दुर्ग (तारंगाजी) पर विशाल और उन्नत जिन चैत्य बनवाये थे वैसे प्रस्तुत तीर्थाधिराज श्री गिरिनार तीर्थपर जो चैत्य बनवाये थे उनकों आज अपने कुमार पालकी टूंकके नामसें पहचानते हैं, इन चैत्योंका निर्माण और इनकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् ११९९ से १२३० तक किसी भी सालमे हुई है क्योंकि–प्रस्तुत नरेशका सच्चा समय यह ही है ।

आपकी राजधानी अनहिलपुर–पाटन, भारतके

Aho ! Shrutgyanam

उस समय के सर्वोत्कृष्ट नगरोंमेंसे एक थी। समृद्धिके शिखर पहुंची हुईथी। राजा और प्रजाके सुंदर महालयोंसे तथा मेरु पर्वत जैसे ऊंचे और मनोहर देवभुवनोंसे अत्यंत अलंकृत थी। हेमचंद्राचार्यने 'द्वाश्रय महाकाव्यमें इस नगरीका बहुत वर्णन किया है, सुना जाता है। कि उस समय इस नगरमें १८०० तो क्रोडाधिपति रहतेथे। इस प्रकार महाराज एक बडे भारी महाराज्यके स्वामी थे।"

"आप जिस प्रकार नैतिक और सामाजिक विषयोंमें औरोंके लिए आदर्श स्वरुप थे, उसी प्रकार धार्मिक विषयोंमें भी आप उत्कृष्ट धर्मात्मा थे, जितेन्द्रिय थे और ज्ञानवान् थे। श्रीमान् हेमचंद्राचार्यका जबसे आपको अपूर्व समागम हुआ तभीसे आपकी चित्तवृत्ति धर्मकी तरफ जुडने लगी। निरंतर उनसे धर्मोपदेश सुनने लगे। दिन प्रतिदिन जैनधर्म प्रति आपकी श्रद्धा बढने तथा दृढ होने लगी। अंतमें संवत् १२१६ के वर्षमें शुद्ध श्रद्धानपूर्वक जैनधर्मकी गृहस्थ दीक्षा स्वीकारकी।

Aho ! Shrutgyanam

सम्यक्त्वमूल द्वादश व्रत अंगीकार कर पूर्ण श्रावक वने उस दिनसे निरंतर त्रिकाल जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करने लगे। परम गुरु श्री हेमचंद्राचार्यकी विशेष रुपसे उपासना करने लगे। और परमात्मा महावीर प्रणीत अहिंसा स्वरुप जैन–धर्मका आराधन करने लगे। आप बडे दयालु थे किसी भी जीवकों कोई प्रकारका कष्ट नहीं देते थे। पूरे सत्यवादी थे, कभी भी असत्य भाषण नहीं करते थे। निर्विकार दृष्टिवाले थे, निजकी राणीयोंके सिवाय संसार मात्रका स्त्रीसमूह आपको माता, भगिनी और पुत्री तुल्य था। महाराणी भोपल देवीकी मृत्यु के बाद आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया था, राज्य लोभसे सर्वथा पराङ्मुखथे। मद्यपान, तथा मांस और अभक्ष्य पदार्थोंका भक्षण कभी नहीं करते थे, दीन दुःखीयोंकों और अर्थी जनोंको निरंतर अगणित द्रव्य दान करते थे। गरीब और असमर्थ श्रावकोंके निर्वाह के लिए हरसाल लाखों रुपये राज्य के खजानेमेंसे देतेथे। आपने लाखों रुपयोंको व्यय कर जैनशास्त्रोंका उद्धार कराया और अनेक

Aho ! Shrutgyanam

पुस्तक-भंडार स्थापन किये । हजारों पुरातन जिन मंदिरोंका जीर्णोद्धार कराकर तथा नये बनवा कर भारत-भूमिको अलंकृतकी । तारंगादि तीर्थ क्षेत्रों पर के, दर्शनीय और भारत वर्षकी शिल्प कलाके अद्वितीय नमूनेरुप, विशाल और अत्युच्च मंदिर आज भी आपकी जैनधर्म प्रियताको जगत्में जाहीर कर रहे हैं । इस प्रकार आपने जैनधर्मके प्रभावको जगत्में बहुत बढाया । संसारको सुखी कर अपने आत्माका उद्धार किया एक अंग्रेज विद्वान् लिखता है कि-" कुमारपालनें जैनधर्मका बडी उत्कृष्टतासे पालन किया और सारे गुजरातको एक आदर्श जैन-राज्य बनाया ।" आपने अपने गुरु श्री हेमचंद्राचार्यकी मृत्युसे छ महीने बाद १२३० में ८० वर्षकी आयु भोगकर, इस असार संसारको त्याग कर स्वर्ग प्राप्त किया "

[कुमारपाल चरित्रकी प्रस्तावनासे उद्धृत]

Aho ! Shrutgyanam

(टूंक संप्रति महाराज)

श्री बर्धमान स्वामी के पट्ट प्रभावक प्रथम श्री सुधर्म स्वामी पांचवें गणधर और पहले पट्टधर हुए। पचास वर्ष गृहस्थाश्रममें रह कर तीस वर्ष प्रभुकी सेवामें व्यतीत करके श्री वीरपरमात्माके निर्वाण बाद बारां वर्ष छद्मस्थ और आठ वर्ष केवली अवस्थामें सर्व आयुः सौ १०० वर्षका पूर्ण करके वीर प्रभुके निर्वाणसे वीस २० वर्षके बाद मोक्षगामी हुवे ॥१॥ उनके पाटपर जंबुस्वामी बैठे। जंबुस्वामीने ९९ कोटि सोनामोहरे छोड अप्सरा जैसी आठ स्त्रियोंका त्याग कर माता पिताकी आज्ञा लेकर सिर्फ सोला १६ वर्षकी छोटी उमरमें बाल ब्रह्मचारी पणे सुधर्म स्वामीके पास दीक्षा अंगीकार की। जंबुस्वामीने १६ वर्ष गृहस्थभावमें-वीस २० वर्ष व्रतपर्यायमें ४४ वर्ष युग प्रधान पदमें सकल आयु ८० वर्षका भोगकर श्री महावीरस्वामीके निर्वाणके बाद चौसठवे (६४) वर्ष मोक्ष प्राप्त किया। २।

श्री जंबुस्वामीके पाटपर श्री प्रभवस्वामी वि-

Aho ! Shrutgyanam

राजधान हुए वह तीस वर्ष संसारमें और ४४ वर्ष दीक्षावस्थामें रहकर ११ ग्यारह वर्ष युग प्रधान पदमें रहकर ८५ वर्षका सर्व आयुः पूर्णकर प्रभु श्री महावीरस्वामीके निर्वाणसे ७५ वर्ष पीछे मोक्ष पधारे । ३ ।

प्रभवस्वामीके पदपर श्री शय्यंभवसूरि बैठे और उन्होंने यज्ञकी क्रिया कराते हुवे यज्ञके स्थंभके नीचेसे श्री जिनराजकी प्रतिमाको प्रकट कराकर आत्म श्रद्धासे दर्शन किये. उसीही प्रशस्त योगके बलसे उनकों जैन दर्शनकी और चारित्र धर्मकी प्राप्ति हुई । प्रभवस्वामीने इन्हे प्रतिबोध कर अपना संयम श्रुत और आचार्य पद दिया पद परंपरासे शय्यंभव सूरिजी भगवानके चौथे पाटपर थे। आपने जब दीक्षाली उसवक्त आपके घर लडकेकी उमेद वारी थी आपके चारित्र लेनेके बाद आपकी सांसारिक धर्मपत्नीसे एक लडका पैदा हुवाथा जब वह लडका अपने आपकों अच्छी तरह समझनें लगा तब उसकों भी आपनें दीक्षित कर लिया । आपनें जब अपनें अपूर्व ज्ञान बलसे लडकेके जीवित तर्फ उपयोग

Aho ! Shrutgyanam

दिया तो सिर्फ ६ छः मासके बाद उसका काल दिखाई दिया आपनें उस स्वतनुजमुनिका शीघ्र कल्याण करनेके लिये " श्री दशवैकालिक " सूत्र बनाकर उस होनहार बालकको पढाया। लडका उस सूत्रके अनुसार क्रियाको पालकर समाधि पूर्वक अनशन कर देवभूमिमें देव हुवा।

दशवैकालिक सूत्र दिन प्रतिदिन संयमी चारित्रपात्र साधु साध्वी वर्गको उपकारी होने लगा, और दुप्पसहसूरि पर्यंत शासनको उपकारी होगा।४।

श्री शय्यंभव सूरिजीके पाटपर श्री यशोभद्र सूरिजी बैठे यह आचार्य २२ वर्ष सांसारिकअवस्थामें रहके दीक्षित हुवे १४ वर्ष सामान्य पर्यायमें रहे ५० वर्ष युगप्रधानपद्वी पाकर ६२ वर्षकी उमरमें श्री मन्महावीर निर्वाणसे ९८ वर्षके बाद स्वर्गारूढ हुए ॥ ५ ॥

इनके बाद श्री संभूतिविजय भद्रबाहु दो पद धर आचार्य हुवे

श्री संभूतिविजयजी ४२ वर्ष गृहस्थावस्था चा-

Aho ! Shrutgyanam

लीस ४० वर्ष सामान्य पर्यायमें ८ आठ वर्ष युग प्रधानपनें रहकर ९० वर्षकी आयुः पूर्ण कर देव लोक गये ।

भद्रबाहु स्वामी ४२ वर्ष संसारमें रहकर १७ सतारां वर्ष सामान्य पर्यायमें १४ वर्ष युगप्रधान पद्वी पालकर ७६ वर्षकी अवस्थामें माहावीर निर्वाण के १७० वर्ष बाद स्वर्गारूढ हुए ॥६॥

इनके पाटपर श्री स्थूलिभद्रजी बैठे स्थूलिभद्र स्वामी ३० वर्ष गृहस्थ रहे २४ वर्ष सामान्य साधुपनेमें रहै, ४५ वर्ष युग प्रधान पदमें रहे ९९ वर्षकी उमरमें श्रीवीरपरमात्माके निर्वाणसे २१५ वर्षे स्वर्गारूढ हुए ॥ ७ ॥

स्थूलिभद्रस्वामीके पाटपर आर्यमहागिरि और–आर्यसुहस्ति सूरिजी विराजमान हुए, आर्य–महागिरि बडे त्यागी थे प्रायः जंगलोंमें रहकर आत्मसाधन किया करते थे, जिन कल्प के व्यवच्छेद होनेपर भी उस कल्पकी तुलना किया करते थे!

आर्यसुहस्तिसूरिजी वस्तिमें रहतेथे परंतु बडे निर्लेप थे. बारांवर्षी दुष्कालमे किसी एक भिक्षा-

Aho ! Shrutgyanam

चरकों भिक्षा देकर आपनें आपना शिष्य बनाया वह भिक्षाचर उत्तम भावसे एकही दिनका संजम पालकर कुणालका लडका संप्रति हुआ ।

वह भाविभव्यात्मा संप्रति कुमार जब युवान हुवा तब नगरमें रथयात्राके साथ फिरते हुए आर्य-सुहस्ति सूरिजीको देखकर प्रतिबोधकों प्राप्त हुआ.

जन्मान्तरीय गुरु शिष्य संबंध उसने जाति-स्मर्णसें जान लिया. इसी ही लिये वोह आचार्य महाराजका पक्का उपासक बनगया. आचार्य महा-राजनें उसे जैन धर्मका स्वरुप समझाकर गृहस्था वस्थाके उचित धर्मसे विभूषित किया ।

संप्रति नरेश वासुदेव न होकर भी त्रिखंडाधि-पति—अर्ध भरतभोक्ता अर्धसम्राट कहलाता था.

॥ संप्रतिके किये शुभ कार्योंकी सूचि. ॥

१२०५००० बारह लाख पांच हजार जिन प्रासाद बनवाये.

Aho ! Shrutgyanam

एक क्रोड पचीस लाख नये जिन बिम्ब बन-वाये अनार्य देशोंमें जहां कि जैनधर्मको कोई नही जानता था वहां भी अपने निजके आदमियोंको भेज भेज कर धर्मकी प्रवृत्ति कराई ।

कुछ अरसा पहले जब चिकागोमें एक सार्व-जनिक महासभामें संसार भरके धर्मनेता एकत्र हुए थे तब जैन धर्मके नेता समझ कर श्री महात्मा-रामजी महाराज को भी आमंत्रण आयाथा पूर्वोक्त सूरि श्री आत्मारामजी माहाराजने अपने धार्मिक असूलोंकी पाबंदीको मान देकर आप खुद न जाकर बैरिष्टर वीरचंद राघवजी गांधीको भेजाथा वीरचंद राघवजीने श्रीमान के सिद्धान्तोंको सम-झाकर और अनादिसिद्ध श्री जैनधर्मके तत्वोको बताकर उस देशके लोगोंको खूब धर्मप्रिय बना-याथा, गांधीजी जब लेक्चरों द्वारा उस देशकों जैनधर्मकी पवित्रता एवं प्राचीनता समझा रहेथे ।

इतनेमें वहांके किसी शहरमेंसे श्री सिद्धचक्र जीका अती प्राचीन यंत्र मिला वो वीरचंद गांधीको दिखलाया गया, और पूछा के यह क्या चीज है ?

Aho ! Shrutgyanam

खाने नौ ९ मालूम देते है और सब प्राय: घसा हुवा होनेसे समझमें नहीं आता गांधीजीने अपने पाससे सिद्धचक्र नवपदजीका मंण्डल दिखलाकर उन्हें समझाया कि यह अमुक चीज है इसी प्रकार अष्ट्रीयाके "हंगरी" नामक प्रांतके "वुदापेस्त" प्रसिद्ध शहरमें किसी अंग्रेजके कुआ खोदते हुए, चरम तीर्थंकर श्रीमन्महावीर स्वामीकी प्रतिमा निकतीथी

जैन इतिहासके अनुसार इन प्रदेशोमें संप्रति नरेशका राज्य और जैनधर्मके सुचिन्ह प्रमाण सिद्ध है.

सारे सभ्य संसारका यह विश्वास है कि सन १४९२ ई०में "कोलंबस"ने अमेरिकाका आविष्कार किया। पर यह मत भ्रमात्मक है। वहां हिन्दू और बौद्धोंके बहुत पुराने चिह्न मिले हैं। दक्षिणी अमेरिकाके "पेरु" नामक राज्यमें एक सूर्य्य मन्दिर है। इसकी मूर्तिका आकार उनाव (दतिया) के सूर्य्य मन्दिरकी मूर्तिसे मिलता है। औरभी कई एक चिन्ह मिलते हैं। जिनसे बहुत पुराने जमाने में हिन्दुओंका वहां जाना साबित होता है.

Aho ! Shrutgyanam

प्रोफेसर जान फ्रायर अमेरिकाके 'हारपर्स' नामक मासिक पत्रमे एक लेख लिखकर यह बात साबित कर चुके हैं कि कपतान कोलम्बसके सैंकडों वर्ष पहले बौद्ध धर्म प्रचारक गण वहां गयेथे, और उन्होने बौद्धधर्म और एशियाई सभ्यताका प्रचार कियाथा।

हम कहते है वो सुर्य मंदिर नहीं परंतु जैनोका धर्मचक्रही क्युं न हो?

पूर्वकालमें धर्मचक्र बनाये जातेथे और वोह देवमूर्त्तियोंकी तरह विधान पूर्वक मंदिरोंमें स्थापन किये जातेथे।

इस लेखके वाचन समय वाचक महोदय--पद्मासनासीन शान्तरसके विश्रोत एक परमयोगीकी प्रतिमाको देखेंगे, यह प्रतिमा उस जगत्पिताकी है कि जिसने अपने अशेष दुखोंका तिलाञ्जलि देकर संसार भरको अपने समान निर्द्वंद्व बनानेके लिये आत्मा मात्रको कल्याणका मार्ग बतायाथा, और अनादि कालीन अनंत जन्मोके परि दृढ बंधे हुए

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

अष्ट्रीयाके अन्तर्गत हंगरी प्रान्तके बुदापेस्त शहरमें एक अंग्रेजके बगीचेमें खोदते हुये निकली हुई महावीरकी प्रतिमा.

Aho ! Shrutgyanam

कर्मोंका नाश करके अपने वीर महावीर जसै यथार्थ नामोको सत्य कर बतायाथा. जैनसमाजका मंतव्य हैकि—वीरप्रभुके समयमे जैनधर्म बहुत थोडे क्षेत्रमे था. उनके निर्वाणके २३५ वर्ष बाद राजा अशोकके पौत्र संप्रति नरेशने उस धर्मका बहुत दूर तक फैलाव कियाथा अशोकने जैसे बुद्धधर्मका प्रचार करनेके लिये अपने लडके और लडकीको सीलोन (लंकामे) भेज दिया था वैसे इस नृपतिने अपने विश्वासास्पद उपदेशकोंको अन्यान्य देशोमे भेजाथा. साथही यहभी जानना जरुरी है कि महाराज संप्रतिकी राज्य सीमासिर्फ भारतके अमुक देशनगरोमेही नही, किन्तु संसारके प्रायःप्रत्येक खंडमे फैली हुईथी.

अब सवाल यहां यह होसकता है कि ऐसे दिग्विजयी नरेशका जिकर अन्य सांप्रदायिक ग्रथोंमे और संसारके लभ्यशिलालेखोमे क्यो नही.

पहली शंकाके समाधानके वास्ते हमको राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दके लिखे वाक्योंका उतारा कर लेना हीका फी होगा उक्त विद्वानने हिन्दु-

Aho ! Shrutgyanam

स्थानका वर्णन करते हुए लिखाहै कि–"राज्य इस देशका सदासे सूर्य और चंद्रवंशि राजाओंके घरानेमें रहा. परंतु अगले समयके हिन्दु राजाओंका वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नही मिलता. और न उनके साल संवतका कुछ पता लगता है जो किसी कवियां भाटने किसी राजाका कुछ हाल लिखाभी है तो उसे उसने अपनी कविताकी शक्ति दिखलानेके लिये अैसा बढाया है कि अब सचको झूठसे जुदा करना बहूत काठिन होगया.

सिवाय इसके ब्राह्मणोने बौधराजाओंको असुर और राक्षस ठहरा कर बहुतोंका नाम मात्रभी अपने ग्रंथोमे लिखना छोड दिया. और इसी तरह बौध ग्रंथकारोने इनके राजाओंका वर्णन अपनी पुस्तकोमें लिखना अयोग्य जाना तिसपरभी बहुतसे ग्रंथ अब लोप हो गये, बौधोंने ब्राह्मणोके ग्रंथ नाश किये. और ब्राह्मणोने बौधोके ग्रंथ गारद किये. मुसलमानोने दोनोको मिट्टीमे मिला दिया."

दूसरा सवाल यहभी होसकताहै कि–संप्रति राजाके नामका कोइ शिलालेख क्यो नही मिलता?

Aho ! Shrutgyanam

इसका समाधान यह है कि जैसे आज हिन्दुस्थानमे अनेक दानशील मनुष्य हैं बल्कि गिनती कीजाय तो हिन्दुस्थानमे प्रति वर्ष साठक्रोड रुपयेका दान होता है उनमे कितनेक उदार महाशय तो किसीकीभी आंखोके सामने दान नही करते और करके कभी कहतेभी नही. उनका कथन और मंतव्यहै कि—

" यज्ञः क्षरति असत्येन, तपः क्षरति मायया
आयुः पूज्याऽपवादेन. दानं तु परि कीर्त्तनात् ॥१॥

अर्थ—असत्य बोलनेसे यज्ञका फल नष्ट होजाता है, माया करनेसे अर्थात् दंभ—कपट—परवंचना करनेसे तपका फल हारा जाता है अपने पूज्य उपकारी पुरुषोंका अपवाद करनेसे अर्थात् उनको निन्दा करनेसे जिन्दगी घटती है और—दूसरेके पास प्रकाश करनेसे दूसरेके सामने अपनी बडाई करनेसे दानका फल अल्प होजाता है. यह समझकर कितनेक भाग्यवान क्रोडों रुपयोंका दान देते हुए भीनामवरीका लालच नही रखते. इससे मालूम होता है कि संप्रति महाराजभी ऐसीही वृत्तिके मनुष्य

Aho ! Shrutgyanam

थे सुनाजाता है कि नवाङ्गी टीकाकार अभय देव-सूरिजीके संप्रदायमे शिलालेख लिखाना अनुचित समझा जाताथा.

कर्मांशाह शेठके कराये श्री शत्रुंजय महातीर्थके उद्धारके कार्यमे सर्व प्रकारके स्वतंत्र अधिकारोंके होते हुएभी आचार्यश्री "विद्यामण्डण" सूरिजीने अपना नाम किसी शिलालेखमे दर्ज नही करवाया, दूर न जाकर वर्तमान युगकी विचारणा करते हुए मालूम देता है कि आजभी संसारमे अैसे मनुष्य है कि जो कार्य करके भीनामकी परवाह नही करते जोधपुर राज्यान्तर्गत कापरडा तीर्थके उद्धारमे आचार्य श्री विजय नेमिसूरिजीने जो जो कष्ट सहन किये है; सुनकर अनहद अनुमोदना आती है, परंतु उस तीर्थ पर उन्होने अपना नाम किसी प्रशस्तिमे नही लिखवा.

अब मुख्य बात यह है संप्रति नरेशके होनेमें क्या प्रमाण है ? उसके उत्तरमें इतनाही कहना होगाकि संप्रतिके अस्तित्वमे जैन इतिहासही प्रमाणभूत है ! संसारमे अैसा कोई साहित्यक्षेत्र नही कि जिस-

Aho ! Shrutgyanam

मे जैनसाहित्यके अंगभूत जैन इतिहासका प्रचार नही हो।

यहां प्रसंगसे जैन ऐतिहासिक ग्रंथोका परिचय करा देना उचित समझकर थोडोसे कथा ग्रंथोके नाम लिखे जाते हैं। वाचक महाशय उन्हे पढकर जरुर फायदा उठायेंगे।

(१) त्रिषष्टि शलाका पुरुषचरित्र—इस के कर्त्ता आचार्य श्री हेमचंद्रसूरि है आपका जन्म विक्रम सं. ११४५—निर्वाण १२३०।

(२) द्व्याश्रयकाव्य—(प्राकृत) कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमान् हेमचन्द्राचार्यने विक्रम सं. १२०० के करीब इसकी रचना की है.

(३) द्व्याश्रयकाव्य (संस्कृत) उन्ही कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमान् हेमचन्द्राचार्यकी यह रचना है। इसकी रचना वि सं. १२१७ के आसपास हुई है

(४) परिशिष्ट पर्व—यहकृति भी उपर्युक्त श्रीमान् हेमचन्द्राचार्यजीकीही है.

(५) कीर्तिकौमुदी—इस काव्यका रचयिता सोमे-

Aho ! Shrutgyanam

श्वर भट्ट है—जोकि गुजरातके सोलंकियोंका पुरोहित था आपने इसकी रचना वि. सं. १२८२ के करीबकी है।

(६) वसन्तविलास—इसको बालचन्द्रसूरिने तेरहवीं शताद्वीमें बनाया है इसमें वस्तुपाल तेजपालका वृतान्त है।

(७) धर्माभ्युदय महाकाव्य—विजयसेनसूरिके शिष्य श्री उदयप्रभसूरिने तेरहवीं शताद्धीमे इसको बनाया है। १४ सर्गोंमे यह काव्य विभक्त है

(८) वस्तुपाल तेजपाल प्रशस्ति श्रीमान् जयसिंहसूरिने तेरहवी शताद्वीमें इसे बनाया है.

(९) सुकृतसंतीर्तन—वि. सं. १२८५ के करीब लवणसिंहके पुत्र अरिसिंहने इसको बनाया है, इसमें अणहिलवाडेको वसाने वाले राजा वनराजसे लेकरके सुभट सामंतसिंह तकके चावडोंकी वंशावली तथा मूलराजसे भीमदेव तक के, अणहिलवाडेके सोलंकियोंका एवं अर्णोराजसे वीरधवल तकके धोलकाके वाघेलोंका संक्षिप्त वृतान्त और वस्तु-

Aho ! Shrutgyanam

पालका विस्तृत चरित्र है, योंतो जिनहर्षका वस्तुपाल चरित्र सोमेश्वरकी कीर्तिकौमुदी सुकृत संकीर्तनका जर्मन भाषामें भाषान्तर प्रोफेसर डॉ. बुहलरने किया था और उसका अंग्रेजी अनुवाद, इ. एच. वरगेसने इन्डियनएन्टिक्वेरीमें भी प्रकाशित करवाया था ॥

(१०) हम्मीरमदमर्दन–यह एक नाटकका ग्रन्थ है इसकी रचना वीरसूरिके शिष्य जयसिंहसूरिने वि. सं. १२८६ के करीब कीहै ।

(११) कुमारविहार प्रशस्ति–इस प्रशस्तिके कर्ता श्रीमान् वर्धमान गणीहैं तेरहवी शताद्वीमें यह बनाई है कुमारपालके बनाए हुए एक मंदिरकी यह प्रशस्ति है.

(१२) कुमारविहार शतक–इसके रचयिता रामचन्द्राचार्य है इसमें कुमारपालके बनाए हुए मन्दिरका वृत्तान्त है ।

(१३) कुमारपालचरित्र–सोमेश्वर भट्टने इसको चौदहवीं शाताद्वीमें लिखा है इसमे राजा कुमारपालका चरित्र है ।

Aho ! Shrutgyanam

(१४) प्रभावकचरित्र–ऐतिहासिक विषयका यह उत्तम ग्रन्थ है, श्रीमान् प्रभाचन्द्र आचार्यने इसको वि. सं. १३३४ में बनाया है। इसमें वज्रस्वामीं आदिके २२ प्रबंध है

(१५) प्रबन्ध चिन्तामणि–इसके कर्ता हैं मेरुतुंगाचार्य वि. सं. १३६१ में इसको बनाया है.

(१६) श्री तीर्थकल्प–इसके कर्ता श्रीमान् जिनप्रभसूरि हैं इस ग्रन्थका दूसरा नाम कल्पप्रदीप है जिनप्रभसूरि वि. सं. १३६५ में हुए हैं इस ग्रन्थमें करीब ५८ कल्प और स्तव हैं.

(१७) विचारश्रेणी–इसके कर्ता मेरु तुंगाचार्य हैं। यह ग्रन्थ अंचलगच्छीय आचार्यने बनाया है इस ग्रन्थसेभी गुजरातके चावडा राजाओंके राजत्व समय पता मिलता है.

(१८) स्थविरावली–इसके कर्ताभी अंचलगच्छीय मेरु तुंगाचार्यही हैं इसमें कई आचार्योंका वर्णन है।

(१९) गच्छप्रबन्ध–इसके कर्ता हैं ककसूरि वि.

Aho ! Shrutgyanam

सं. १३७१ में इसको बनाया है इस ग्रन्थमें समराशाह तथा सहजाशाहके जीवन चरित्र हैं येह दोनों देशलके पुत्र थे.

(२०) महामोह पराजय नाटक—यशः पाल मंत्रीने अजयपालके राज्यमें इसको बनाया है.

(२१) कुमुदचन्द्र प्रकरण—इसके कर्ता हैं श्रीमान् यशश्चन्द्र। इसमें वादि देवसूरि और पं. कुमुचन्द्रका संवाद दिया गया है।

(२) प्रबन्धकोश—इसको चतुर्विंशति प्रबन्ध कहते हैं। मलधारी श्रीमान् राज शेखर सूरिने वि. सं. १४०५ में इसको बनाया है.

(२३) कुमारपाल चरित्र—इसको श्रीमान् जयसिंहसूरिने वि० सं. १४२२ में बनाया है.

(२४) कुमारपाल चरित्र—इसके कर्ता हैं श्रीमान् सोमतिलकसूरिने वि. सं. १४२४ के आसपास इसको रचा है। इसमें भी उन्हीं राजाओंका वृत्तान्त हैं।

(२५) कुमारपाल चरित्र—चोंदहवी शताद्दी के

Aho ! Shrutgyanam

आसपास रत्नसिंहसूरिके शिष्य चारित्र सुन्दर गणिने इसको बनाया है इसमें भी मूलराजसे लगाकर कुमारपाल तकके सोंलकियोंका इतिहास है.

(२७) उपदेश सप्ततिका–इस ग्रन्थके कर्ता सोम धर्म गणि हैं यह ग्रन्थ भी उपदेश तरंगिणी की तरह कितनेक अंशामें ऐतिहासिक रीत्या उपयोगी है इस ग्रन्थकी संवत् १४२२ में रचना हुई है।

(२८) गुर्वावली–इसके कर्ता हैं मुनि सुन्दरसूरि। यह ग्रन्थ वि. सं. १४६६ में बना है।

(२९) कुमारपाल प्रबन्ध–इसके रच यिता है श्रीमान् जिनमंडल उपाध्याय वि. सं. १४९२ में इसको बनाया है.

(३०) महावीर प्रशस्ति–वि० सं. १४९५ में श्रीमान् चारित्ररत्न गणिने इसको बनाया है। इस ग्रन्थमें चित्रकूटके महावीर स्वामीके मंदिरकी प्रशस्ति है।

(३१) पंचाशति प्रबोध संबन्ध श्रीमान् शुभशील गणिने वि० सं. १५२१ में इसको बनाया है

Aho ! Shrutgyanam

इसमें कई एक निबन्ध हैं जैसे गौतम स्वामीका अष्टापद तीर्थ वंदन कानहडा महावीर स्थापना, जिन प्रभाचार्य संबन्ध जिनप्रभसूरि अवदात संबन्ध झघडु साधु संबन्ध वगैरह ।

(३२) वस्तुपाल चरित्र इसके कर्ता तपाच्छीय श्रीमान् जिन हर्ष गणि हैं सोलहवीं शताद्बीमे यह बना है.

(३३) सोम सौभाग्य काव्य- यह काव्य प्रतिष्ठा सोम गणि विरचित है इसको वि. सं० १५२४ में बनाया है ।

(३४) गुरु गुण रत्नाकर काव्य–इसके रचयिता श्रीमान् सोम चारित्र गणिने वि० सं० १५४१ में इसको बनाया है ।

३५ जगद्गुरु काव्य २३३ श्लोकोंका यह एक छोटासा काव्य है इसके कर्ता विमलसागर गणिके शिष्य श्रीमान् पद्मसागर गणि हैं सं. १६४६ में यह काव्य बना है.

(३६) उपदेश तरंगिणी इसके कर्ता श्रीमान्

Aho ! Shrutgyanam

रत्न मंडण गणि हैं सोलहवी शताब्दी मे आप हुए हैं।

(३७) हीर सौभाग्य काव्य—श्रीमान् सिंहविमल गणिके शिष्य श्रीदेवविमल गणिका बनाया हुआ यह एक महाकाव्य है.

(३८) श्रीविजयप्रशस्ति काव्य भी एक बडा भारी ऐतिहासिक काव्य है इसके कर्ता श्रीमान् हेमविजय गणी तथा श्रीमान् गुण विजय गणी हैं यह भी महाकाव्य का ग्रन्थ है वि० सं० १६८८ में यह काव्य बना हैं.

(३९) श्री भानुचंद्र चरित्र—इस काव्य के रचयिता श्रीमान् सिद्धिचन्द्र उपाध्याय है सतरहवी शताब्दीमें इसको बनाया है—

(४०) विजयदेव माहात्म्य. इसके कर्ता श्रीमान् वल्लभोपाध्याय है। इसमें श्रीविजय—देवसूरिजीके जीवनका वर्णन करनेमें आया है।

(४१) दिग्विजय महाकाव्य—१८ वीशताब्दीमें श्रीमान् मेघ विजय उपाध्यायने इसको बनाया है

Aho ! Shrutgyanam

इसमें अधिकतया विजयप्रभसूरिका ही ऐतिहासिक वृत्तान्त है।

(४२) देवानन्दाभ्युदय महाकाव्य—इसको भी मेघ विजय उपाध्यायने बनाया है इसमें विजय देवसूरिका ऐतिहासिक वृत्तान्त है.

(४३) झघडु चरित्र—इसके कर्ता श्रीमान् सर्वानंदसूरि हैं इसमें झघडु शाहका जीवनचरित्र विस्तारपूर्वक दिया गया है, तथा और भी बहुतसी ऐतिहासिक बातोंका उल्लेख है यह ग्रन्थ छप चुका है।

(४४) सुकृतसागर—इसके रचयिता श्री रत्नमण्डन गणि हैं इसमें पेथड, झांझण तथा तपागच्छीय धर्म घोषसूरिका जीवन चरित्र है—इन इतिहास संबंधी ग्रंथो के आधारपर ही ज्यादातर हिन्दुस्थानका निर्वाह है वरन् अन्य संप्रदायोंमे ऐतिहासिक ग्रंथोकी बहुतही त्रुटि है। पूर्वोक्त ग्रंथोंमें किस किस देश यानरेशोका वर्णन है. किस किस समयमे क्या क्या घटना बनी है उसका पता उन उन ग्रंथोसे ही लग सकता है। हां इतना तो जरुर है कि इन ऐतिहासिक ग्रन्थो केविषय विभागका स्व-

Aho ! Shrutgyanam

ल्प परिचय "जैन साहित्य सम्मेलन" नामक विवर्ण पुस्तकके लेखोंसे लगसकता है, उसमे मु. विद्याविजय जी जैसे मुनियोंके और साहित्याचार्य विश्वेश्वरनाथ जैसे परिपक्क अभ्यासियोंके लेखोंसे बहुतसी बातोंका स्पस्टी करण हो सकता है.

(उपर्युक्त पुस्तकोके नाम भी वहांसेही उतारे)

सिवाय इनके "वसुदेवहिण्डी" और "पउम चरिय" नामक ग्रंथ उपर लिखे ग्रंथोसे भी अति प्राचीन और इतिहास के भंडार हैं मुशकिल यह है कि उनको आज तक किसीने छपवाकर प्रसिद्ध नही किया। पउमचरिय तो अभी थोडा समय हुआ भावनगरकी श्री जैनधर्मप्रसारकसभा तर्फसे छप गया है अधिक सौभाग्यकी बात यह है कि उस ग्रंथका संशोधन कार्य जर्मन विद्वान डो० हर्मन जे कोबीके हाथसे ही समाप्त हुआ है।

इस सविस्तर लेखका आशय सिर्फ इतना ही है कि यह प्रतिमा (मूर्त्ति) संप्रति राजाके समयकी ही एशिया खंडके हंगरी प्रान्त वर्त्ति बुदापेस्त शह-

Aho ! Shrutgyanam

रमेसे निकली है । इतना ही हमारा वक्तव्य है । इन टूंकोके अलावा—नेमिनाथ टूंक १ मानसिंह भोजराज टूंक, अंबिकामाता टूंक मेरकवशी ४ तीसरी टूंक ५ चौथी टूंक ६ पांचमी टूंक ७ कालिका टूंक ८

इनके अतिरिक्त राजीमती फुफा वगैरह अनेक गुफाऐं सहसावन वगैरह अनेक वण, हस्ति कुंड आदि अनेक कुंड । अनेकानेक अपूर्व वृक्ष । अनेकानेक झरणे । अनेकानेक लताऐं । अनेकाने खनियें । अनेकानेक तापसाश्रम । ध्यान लगानेकी जगह । योगाभ्यासके स्थान, हवाखानेके कूट । अनेक औषधियां, अनेक रत्न, अनेक मणि, अनेक जडी, अनेक बूटी, अनेक रस कुंपी । अनेक चरणपादुका । अनेकानेक पूर्वपुरुषोंके स्मारक चिन्ह, यहां उपलब्ध हो रहे, हैं अनेक प्रशस्तियां, अनेक शिलालेख अनेक लिपी । अनेक दानपत्र ताम्रपत्र—प्रतिमालेख—यहां इतिहासकी त्रुटिके पूरण करनेवाले विद्यमान है ।

अनेक जातिके वृक्ष । अनेक तरहके फूल ।

Aho ! Shrutgyanam

अनेक तरहके फल, अनेक प्रकारकी लताअें। अनेक तरहकी लकडी। अनेक जातिकी धातुअें। अनेक जातिके मृग। अनेक जातिके पक्षी। अनेक जातिके व्याघ्र अनेक जातिके सर्प–सिंह–शार्दूल–हकीक–फटिक–नीलम–योगनिष्ठ योगि–अनेक ध्याना रूढ तपस्वी–अनेक कंदाहारी वनवासी–अनेक मंत्र वादी अनेक दीर्घायु अवधूत अनेकानेक ब्रह्मचारी। इस पर्वतमें रहते थे।

गिरनार तीर्थके सविस्तर हालके लिये दौलतचंदजी बरोडियाका लिखा गिरनार महात्म्य देखनेकी भलामण करके कल्याणके कारण भूत इस ग्रंथको समाप्त किया जाता है। ॐ शांति ३॥

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

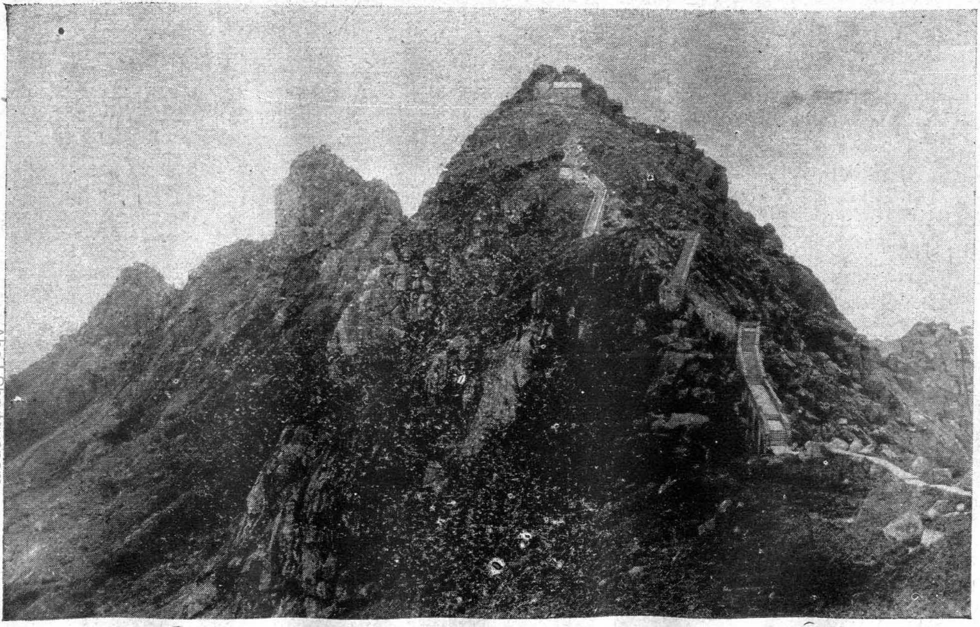

गिरनारपर्वत—पंचमी टोंक:

Aho ! Shrutgyanam

॥ गिरनार रास ॥

श्री सारदायै नमः

अथ श्री गिरिनारि गिरिनो उद्धार लिख्यते

॥ वस्तु ॥

सयलवासव ॥ वसेपयमूल नमिशुं निरंतर चित्तभत्तिभर ॥ सांति करण चौविस जीनवर ॥ नेमिनाथ बावीसमाए ॥ सियलरयण भंडार सुहं-कर तस पय पाय अनुसरिए । महिमा गढ गिर-नार ॥ सहिगुरु आ देश सीर लइ ॥ बोलिस कंपि विचार ॥ १ ॥

ढाल १.

॥ देशी बुधरासानि ॥

कंपि विचार कहुं मन रंगा श्रुत देवि आधा-रजी ॥ वदनकमल ॥ विलशेवर वाणीसा सामणी संभारजी ॥ १ ॥ जंबुद्वीप भरत क्षेत्र माहें ॥ उत्तर दीशे उदारजी ॥ मनोहर काश्मीर मुख्य मंडन ॥

Aho ! Shrutgyanam

नवफुल पत्तन सारजी ॥ २ ॥ तिहां नवहंस नामे छे नरवर ॥ विजया छे तस राणीजी ॥ चंद्र शेठ तिण पुर अधिकारी विनयवंत बहु प्राणीजी ॥ ३ ॥ नंदन त्रने तासनीरुपम ॥ रतन वडो वीवहारीजी ॥ बीजो मदनपूरणसिंह त्रीजो जैनधर्म अधिकारीजी ॥४॥ लक्ष्मीवंत सुलक्षण सोभित ॥ तेजे रवि परतापीजो ॥ दृढ कछा मुख मीठा बोले । जस किर्त्ति जग व्यापीजी ॥ ५ ॥ विनय विवेक दान गुण पुरण ॥ राय दीये बहु मानजी ॥ वडो बंधव सुसदा विचक्षणा श्रावक रत्न प्रधानजी ॥ ६ ॥ रतन शेठ निघरणी पद्मणी ॥ सिलवंती सुविचारजी ॥ तेहनो सुत बालक बुद्धिवंतो ॥ कोमल नामे कुमारजी ॥ ७ ॥ नेमिनाथ नीरवाण पधारा । वरस साहस हुआ आठजी रतन शेठ तिण अवसर हुओ ग्रंथे एवो पाठजी ॥ ८ ॥ अतीसयज्ञानी प्रोढ माहादेव ॥ वन पोहोता रिषीराजजी । राजा रतन शेठ सवीवांदे सीधा वंछित काजजी ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ढाल २.

॥ सांभली जीनवर मुखथी साचुं ॥ ए देशी छे ॥

सभा सहू आगले सोय मुनिवर ॥ धर्म देशना भासेरे भविक जिवने भव भय हरवा । प्रवचन वचन प्रकाशेरे ॥ धर्म करोरे धर्मधुरंधर ॥ १ ॥ अर्थ कामने कामेरे ॥ धर्म तणा संबल विण कहो किम ॥ प्रांणी वांछित पामेरे ॥२॥ सोए धर्म दोइ भेदे भाष्यो ॥ श्री आग्यम जीन राजेजी ॥ सर्व वृत्ति देशवृत्ति अधिकारे ॥३॥ यति श्रावकने काजेरे पंच महाव्रत धारी मुनिवर ॥ ४ ॥ श्रावक वीरता विरतीरे ॥ श्रीजीन आणा दोयने अधकी ॥ दया भाव अनुसरतीरे॥ पेहेलुं समकीत सुध करेवा ॥ श्री जिन भक्ति उदाररे ॥ सोए आराधो चार निषेपे॥ बोलेते अनुजोग द्वारेरे नामथापना द्रव्य भावजीन ॥ जीन नामा नाम जीनरे ॥ ठवणजीनाते जीनवर प्रतिमा ॥ सोहमसामि वचनरे ॥६॥ ध०॥ द्रव्य जिना जीन जीव कहीजे ॥ वंदे भरत नरिंदरे ॥ समवसरण बेठाजे स्वामी ॥ ते तो भावि जीनंदरे ॥७॥ ध० ॥ भाव जिणंदतणो जो विरहे ॥ जीन प्रतिमा जिन सरखिरे ॥ द्रव्य

Aho ! Shrutgyanam

भाव पुजा तस सारे ॥ भविजन प्रवचन परखीरे ॥ ८ ॥ ध० ॥ भाव पुजा ते कही मुनिवरने ॥ श्रावकने द्रव्यभावरे ॥ दृष्टिवादे बोलीजी पुजा भवजल तरवा नावरे ॥ ९ ॥ ध० ॥ श्री जिन अंगे मज्जन करतां ॥ सत उपवासनुं पुन्यरे द्रव्य सुगंध विलेपन करतां ॥ सहस लाभ होय धन्यरे ॥ १० ॥ ध० ॥ सुरभि कुसम मालाये पूजे ॥ लाभ लक्ष उपवासरे ॥ नाटक गीत करेजिन आगे ॥ लहे अनंत सुख वासरे ॥११॥ ध०॥ श्री जिन भक्ति तणां फल एहवां ॥ जांणी लाभ धरीजेरे ॥ वलि विषेके शेत्रुं-जय सेवा ॥ लाभ पारनलहांजेरे ॥ १२ ॥ ध० ॥ भाग एक शेत्रुंजय केरो ॥ तीर्थ श्री गिरिनाररे ॥ नेमिकल्याणिक त्रण हुआ जिहां ॥ महिमा न लहुं पाररे १३॥ ध० ॥ प्रगट श्री प्रभास पुराणे ॥ जो जो मूकी मानरे ॥ रेवतनेमि तणो जे महिमा ॥ उभयाने इशानरे ॥ १४॥ ध० ॥ वलि बंधन सामर्थ तणे खपे ॥ तपजिहां तप्यो मुरारीरे ॥ अधिकार प्रगट जिहां दिसे ॥ वामनने अवताररे १५ ॥ध०॥ यतः ॥ प्रभास पुरांणना श्लोक ॥ पद्मासन समासीन–

Aho ! Shrutgyanam

श्याममूर्त्तिर्निरंजनः नेमिनाथः शिवेत्याख्या, नामचक्रेस्य वामनः ॥ १ ॥ रेवताद्रौ जिनोनेमि र्युगादि र्विमलाचले ऋषीणामाश्रमा देवा मुक्तिमार्गस्य कारणं ॥ २ ॥ कलिकाले महाघोरे, सर्वकलमशनाशनः। दर्शनात्स्पर्शना देव कोटी यज्ञ फल प्रदत ॥३॥ उज्जयंत गिरौ रम्या, माघे कृष्ण चतुर्दशी ॥ तस्यां जागरणं कृत्वा संजातो निर्मलो हरिः ॥ ४ ॥ नत्वा शत्रुंजयं तीर्थं, गत्वाचरैवताचलं ॥ स्नात्वा गजपदे कुंडे पुनर्जन्म न विद्यते ॥

॥ ढाल ३ पुर्वली ॥

रेवत गिरिवर नेमिश्वर मूरति ॥ उतपतिनो अधिकाररे ॥ जीर्ण प्रबंधे जे वलि बोल्यो ॥ ते सुणजो विस्ताररे ॥१॥ ४० ॥ भवियण भाव घणो मन आंणि ॥ सांभली श्री गुरु वांणिरे ॥ तिरथ जात्रा तणा फल जाणी ॥ जन्म सफल करो प्राणिरे ॥२॥ भ० अचंबा आ एण भरते अतित चोविशि ॥ त्रिजा सागर स्वामिरे ॥ उज्जेणि राजा नर वाहन ॥ पुछे अवसर पामीरे ॥भ०॥ ३ ॥ कैये मुक्ति होसे

Aho ! Shrutgyanam

मुझ देवा ॥ जिनवर कहे तिवारेरे ॥ आगामीक चोविशि नेमिजिन ॥ बावीसमानें वारेरे ॥भ० ॥४॥ एम सुणि सागर जिन पासे ॥ सो नृप संजम लेइरे ॥ पंचम कल्प तणो पति हूवो ॥ अवधी ज्ञान धरेइरे ॥भ०॥ ५ ॥ कीधुं वज्रमय मृतिकानु श्रीनेमिनाथनुं बिंबरे ॥ परम भावसुं पूजे वासव दश सागर अविलं-बरे ॥भ० ६॥ नेमिनाथना त्रण कल्पाणक रैवत गि-रीवर जाणीरे ॥ सेख आयु आपण पूंलैने सा प्रतिमा तिहां आणीरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ गिरिगंधर्वना चैत्य मनोहरः गर्भ गेहनिपावेरेः सोवन रत्न मणीमय मूर्तिः तिणकार तिहां ठावेरे ॥ भ० ८ ॥ कंचन बलाणक नाम निपाव्यु भुवनति आगल साररे ॥ बज्रमय मृतिका सामुरति त्यांथापि मनोहाररेः ॥भ० ॥ ९ ॥ सोहरि नेमिनाथने वारे हुवो नृप पुण्य साररे नेम मुखे पुरव भव समरी पोतो गढ गिरना-ररे ॥ भ ॥ १० ॥ तिहां निज कृत्य जीन प्रतिमा पूजी सुतने सोंपी राज्यरे नेमिपासे संजम व्रत पाळी साधु सघलुं काजरे ॥ भ० ॥ ११ ॥ ए रेवत तिरथ मुळ उत्पत्ती पुरव पुरषे भाखीरे ॥ वली शेत्रुंजय

Aho ! Shrutgyanam

मातम मांही वात एसि परदाखीरे ॥ भ० ॥१२॥ श्री शेत्रुंजय उधार कराव्या ॥ भरतादिके जै वारेरे ॥ नेमनाथना त्रण कल्याणिक रेवत गिरिये ते वारेरे ॥ भ० ॥ १३ ॥ वर प्रासाद भरावि प्रतिमा जब पांडव उद्धाररे थापी लेपतणी प्रभु मूरति तिहां एवो अधिकाररे ॥ भ० ॥ १४ ॥ इम गिरिनार तिरथनो महीमा अवधारो भवि लोकरे नेमिनाथनी सेवा सारी लहो अनंत फल थोकरे ॥ भ० ॥ १५ ॥

ढाल चोथी.

भरत नृप भावशु ए ए चाल छे ॥ देशि स्तुतिनी ॥

एम सुणी सहिगुरु देसनाए श्रावक सोहे रत्नके ॥ हरख धरे सुणो हे ॥ सभा सहु कोइ देखतां हे ॥ करे अभीग्रह धन्य के ह० ॥ १ ॥ आजथकी प्रभु माह्य ए पंच विगय परिहार के ह० भोमि शयन ब्रह्मचर्य धरुं हे लेयुं एकवार आहार के ॥ ह० ॥ २ ॥ संघ सहू गिरनार जावा हे जीहां नही भेटु नेमके ह० तिहां लगीमे अंगीकरोरो इह अभिग्रह एम के ॥ ह० ॥ ३ ॥ प्राण शरीरे जोधरु हे करु

Aho ! Shrutgyanam

एक जात्रा सारके ॥ ह० ॥ ४ ॥ सह गुरुने एम विनवीए ॥ पोचे घर परीवार के ॥ ह० ॥ ४ ॥ राय प्रतेकेरि वीनतिए लीधुं मुरत चंगके ॥ ह० ॥ कंकोतरी तिहां पाठ वेए ॥ थानक थानके मन रंग-के ॥ ह० ॥५॥ नगरी माहे गोखाव्युं जेहने जोए जेहके ॥ ह०॥ ६ ॥ तेसविल्पो मुज पासथिए जात्रा करो धरी स्नेहके ॥ ह० ॥ ६ ॥ संघ सबल तिहां मेलिओए ॥ लोकन लाभे पारके ॥ह०॥ सहजत्रा-लानि संख्या नहि हे ॥ गज रथ अश्व उदारके ॥ ह० ॥७॥ पडह अमारि जावियारे ॥ सागे लोक अपारके ॥ ह० ॥ ८ ॥ बंध मुकावी बहु परिए लोक प्रते सत्कारके ॥ ह० ॥ ८ ॥ करभखचर सोभन भरा हे ॥ करे सखायत रायके ॥ ह० ॥९॥ सैन्य सबल साथे लियोरे उलट अंग न मायके ॥ह० ॥ ९ ॥ सेठाणी राणी कनेये ॥ करे मोकलामणी काजके ह० ॥ राणी कहे किपण थइए ॥ रखे अ-णावो लाजके ह० ॥ १० ॥ देतां कर चंचो रखे ए लक्ष्मी लियो मुज पासके ह० ॥ तुजो माहारी बे-नडीए ॥ जो कहवाइश साबश के ह० ॥ ११ संघ

Aho ! Shrutgyanam

पति तिलक धराविया ए । श्रावक रत्न सुजाण के ॥ह०॥ कोटी ध्वज व्यवहारियाए ॥ मलीया राणराय के ॥ ह० ॥ १२ ॥ देरासर साथे घणाए ॥ पुजा भक्ति जिनंद के ॥ ह० ॥ गंद्धर्व ज्ञान कला करे ए ॥ भाट भटित कहे छंद के ॥ ह० ॥ १३ ॥ जल सुखने काजे लिया हे ॥ साथे चर्म तलाब के ॥ ह० ॥ सबल साचवणी संघनिरे ॥ दीन २ अधिको भावके ॥ ह०॥१४॥ मार्ग तीरथ वंदता ए ॥ सहगुरु साथे सुचंदके ॥ ह०१५॥ रेलातो लागिरि आविआए ॥ कुशले सघलो संघके ॥ ह० ॥ डेरा तंबु खडा किया ए ॥ उतरिया महत उमंग के ॥ ह० ॥ १६ ॥

ढाल ५ मो.

रोला तोला पर्वतनी घाटी ॥ श्री संग उतरे जामजी पुरुष एक विकराल करुपो ॥ सामो आवी कहे तामजी ॥ १ ॥ सुणजो सुणजोरे भवि लोकाईण थानक थीरथाओजी ॥ मुजनेरे शमझावा रखे कोइ आगल जाओजी ॥सु०॥२॥ अति कालो

Aho ! Shrutgyanam

मश पुंज सरिखो ॥ सुपड सरीखा कानजी आधो नर आधो सिंह सरिखो ॥ दंत खरि पास मानजी ॥सु०॥३॥ मोटा सुंडल सरिखो मस्तक ॥ विश नखपावडा शमानजी ॥ अट्टाट्टहास करे अति उचो ॥ लोक प्रते बीहावेजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ अनेक जनने विदारवा लागो ॥ हुवो हाहा रवतामजी ॥ राज पुरख सुभटे सवि आवि ॥ सो बोलाव्यो सामजी ॥ सु० ॥५॥ कुण तुं देव अछे वादानव ॥ कांजनने संतापेजी ॥ पुजादीक जोइए ते मागो ॥ जीम संघवी तुम आपेणी ॥ सु० ६ ॥ सो कहे समझावा पाखे पग जो भरसे कोइरे ॥ तो माहा मुख माहे थइने ॥ जमपुर जासे सोइजी ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥

अहो ओतम कुल माहेरुः ॥ ए देशी ॥ फागणे फाग खेलाविई ॥

वाणि सुणी सोए पुरखनि विलखां थयां सहू मनजी ॥ तेह सुभट सिग्र आविया ॥ संघवी जिहां-

Aho ! Shrutgyanam

रत्नजी ॥ १ ॥ तेणे वात आवि कही ॥ सुणि वचन कडूआ कानजी ॥ संघ पति सवी परीकर सु, वीलखा थया असमानजो ॥२॥ गीरनार तीरथे जायतां ॥ उपनो विचे अंतरायजी ॥ कहो किणी वीद्धे केलवी ॥ कीजे किस्यो उपायजो ॥ ३ ॥ इहां कोलाहल थयो घणो ॥ थांनके थांनके वातजो ॥ नासतां हिंडे कायरा ॥ मेलो सवी संघातजी ॥४॥ कामनि जन कलिरव करे ॥ मन धरे अति अंदो-हजी ॥ हाहा वचन तिहां उचरे ॥ सांभरे घरनो मोहजी ॥५॥ एक कहे पाछा वलो ॥ जात्रा पोह-त्ति जाणजी ॥ जीवतां जो नर होयसे ॥ तो पामशे कल्याणजो ॥ ६ ॥ एक कहे जइ होवे ते खरुं ॥ अम भणी श्री जिन पायजो ॥ श्रीनेमिजीन भेटया वीना ॥ पाछा वली कुण जायजी ॥ ७ ॥ एक कहे निमितने पुछीइ ॥ होय जे जाणा जोसजो ॥ एक कहे संघ प्रस्तांनमां ॥ मुर्त्त प्रते दिए दोसजी ॥८॥ संघवी साहस आदरी ॥ तेडया जन मध्यस्तजो ॥ [illegible] मीछवो एह पुरुष नइ, शुभ वचने करी स्वस्तजी ॥९॥ [illegible] कहे तइ कीजीइ ॥ दिजीइ मांगे जेहजी ॥

Aho ! Shrutgyanam

अल्परे करीने संतोषीइ ॥ रीझवो वेने ते हजी ॥१०॥ सो भेतने जइ पुछीउं ॥ मोछवी विनय वचनजी ॥ सौ कहे साचुं सांभलो ॥ एणै गिरी रहु निस दिनजी ॥ ११ ॥ स्वामि अछूं आ भोमिनो ॥ हुं देवरुपी जाणजी ॥ तुम संघनो वडो मानवी ॥ मुझ आपो एक आणजी ॥ १२ ॥ पछे संघ सहु निर्भय थइ ॥ पंथे पोहचोरे खेमजी ॥ एह कथन जो नहि मान्सो । तो भेटसो केम तुमे नेमजी ॥१३॥ संघ पति रत्न ते सांभली ॥ एहवा तीहां समाचारजी ॥ सहु संघने बइ सारी करी ॥ बोले एम विचारजो ॥१४॥

॥ ढाल ७ मी ॥

(नंद्या म करसो कोइनी पारकीरे ॥ ए देशी छे)

धवल शेठ लइ भेटणुं आ देशीमां पण छे ॥

रत्नशेठ कहे संघनेरे ॥ वचन एक अवधारोरे ॥ इण थानके अमे रेशुं एकलारे,तुमे जइ नेम जुहारोरे रत्न ॥ १ ॥ अथिर कलेवर आज संघनेरे ॥ काम को ते नही आवेरे ॥ तो पछे इणे कीशुं नीप

Aho ! Shrutgyanam

जे ॥ मुज मन एहवो छे भावरे रत्न ॥ २ ॥ रागि-
जाया राओत सवी ॥ कहे शेठने तामरे ॥ चिरं-
जीवो रत्न तुं सदा ॥ एह अमारुं कामरे रत्न ॥३॥
स्वामि आपण केरे कारणे ॥ त्रण जिम तोली
लीजेरे ॥ वृति तमारी अमे भोगवुं ॥ ते ओशी-
गण केम कीजेरे रत्न ॥४॥ तव साधर्मी श्रावक कहे
॥ सुणो संघ पती वातरे ॥ तुं नर रत्न कुखे धरौ ॥
धन्य तुमारी मातरे रत्न ॥५॥ लक्षोना उदर भरो तुमे ॥
आशा ते सहूनी पुरोरे ॥ मान दिजे पृथिव पति ॥
॥ गुणे नही अधुरोरे रत्न ॥६॥ महिअल भार कर-
वा अमे ॥ अवतरा जगमां जाणोरे ॥ प्रभु अमारां
असार कलेवरां ॥ अमने श्री संघने खप आणोरे
रत्न ॥७॥ मदन पूरण बांधव विहुं ॥ कहे भाइजी
सुणो अर्जरे ॥ बड बंधव तमे अमतणा ॥ ठाम पि-
तानें समजेरे रत्न ॥८॥ पिताने आश्रित जेम बेट-
डा ॥ तिम अमे दास तमारारे ॥ तुम विजोगे सु-
नारा सवि ॥तुमे छो कुटंब सिणगारारे रत्न ॥९॥ आगे
अमने लखमणा ॥ त्रिण जेम तोला माण रे ॥ काज

Aho ! Shrutgyanam

ए अमचे सिरकरो ॥ तुमने होजो कल्याणरे रत्न ॥ १० ॥

॥ ढाल ८ मी ॥

(तिरथ अष्टापद नमिये ॥ ए देशी ॥

पीउ राखे प्राण आधार ॥ पद्मणि एम भांखेरे ॥ तुम पासे कुण गति नारिनि ॥ अम जीवन कुण राखेरे ॥ पी० १ ॥ तुम विजोगे एकली अबला ॥ किम रहे घर निरधारीरे ॥ कंत विना कामनिने सघले ॥ सुनो संसार ए भारीरे ॥पी०२॥ वालमतणे विजोगे अबला ॥ जन्म झुरंता जायरे सर्व सोभा ते दिसे कारमि ॥ भुखण दुखण थायरे ॥ पी० ३ ॥ पियरने सासरे पनोति ॥ पियु विण मान न लहिएरे ॥ असुकुन जाणि तस मुख वरजे लोके विधवा कहियेरे ॥ पी० ४ ॥ पीउ आधिन सदा कुल नारी ॥ पति जाते परलोकरे ॥ अंते जीवित ते पण मृत्यु ॥ पुरीत पियुने शोकरे ॥ पी० ॥ ५ ॥ ए उपसर्ग सहि सहू स्वामि ॥ तुम होजो

Aho ! Shrutgyanam

कुशल कल्याणरे ॥ तुम अवर भलि सुंदरि वरजो ॥ हुं छुं तुम पग त्राणरे ॥ पा० ६ ॥ कोमल सुत कहे सुणोरे पिताजी ॥ अमे सुत रुपे रणिआरे ॥ जे सुत अवसरे अर्थ न आवे ॥ उदर किट ते भरियारे ॥ पी० ७ ॥ मुजने इहां इतला दिन राखि ॥ संघ लइ तुम पोचोरे ॥ जनक जुओ इण वाते जुगतुं ॥ रखे कांइ वाते सोचोरे ॥ पी० ८ ॥ बंधव बिहु प्रते संघवी ॥ नितिनि वाते समझावीरे ॥ संघ सकल संचरतो कीधो ॥ सघली सीख भलावीरे ॥ पी० ९ ॥

॥ ढाल ए मी ॥

देखो गति दैवनीरे ॥ ए देशी ॥

जुओ जुओ धीरज शेठनुंरे ॥ संघ काजे साहसीक ॥ आपणे अंगे आगम्पूरे ॥ मन मांहे निरभीक ॥ प्राणी तुमे जोजोरे रत्न श्रावकनो भाव ए टेक ॥ त्रण जणा तिहांकणे रहारे ॥ पति पत्नीने पुत्र ॥ अवर सनेही थया कारमारे ॥ जुवो जुवो

Aho ! Shrutgyanam

वात विचित्र ॥ मा० २ ॥ संघ सहु को हवे संचरेरे ॥ फरिफरि पाछुं जोय ॥ नयने आंसुण झडि लगी- रे ॥ कंपि ने चाले कोय ॥ मा० ३ ॥ शरण श्री नेमनुं आदरीरे॥ अणशणकीध सागार ॥ संघ पति धीर थइ रयोरे, सहु करे हाहाकार ॥ मा०४ ॥ प्रेत गुफा मांहे लइ गयोरे ॥ रह्यो ते रुंधो द्वार ॥ सिंह नाद अति सुर करेरे ॥ बिहावे ते अपार ॥ मा० ॥ ५ ॥ कोमल सुत प्रीया पन्नणोरे ॥ धरे ते काउ सग ध्यान ॥ कंथ जव कष्टथी छुटशेरे ॥ तव लेशां अनपान ॥ मा० ६ ॥ एहवे रेवतपर्वतेरे ॥ जावे छे क्षेत्रपाल सात ॥ मात अंबाने भेटवारे ॥ तेणे सुणी एह उत्पात ॥ मा० ७ ॥ तेणे जइ अंबाने विनव्युरे ॥ कुरु कुरु शब्दे जेम ॥ पर्वत एक अति धड हडेरे ॥ नवि दिठो आगेरे एम ॥ मा० ८ ॥ कोइक महंत पुरिषने, उपद्रव करे बहु दुष्ट ॥ ज्ञाने अंबाए निहालियोरे ॥ दीठो संघपति कष्ट ॥मा ९॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ ढाल १० मी ॥

॥ चाल चोपाइनी ॥

देवी अंबाए जाणि ए वात ॥ क्षेत्रपाल साथे लइ सात ॥ तेणे थानके उछंगे आवे ॥ सोय प्रेत रुपीने बोलावे ॥ कोमल सुताने पद्मणी नारी ॥ काउसग दीठा सुविचारि ॥ ते उपरे कृपा सुभगति, उपनी अंबानी शुभमति ॥२॥ सो ए प्रेत रुपी प्रति भाखे ॥ दुष्ट कष्ट दे छे इशा पाखे ॥ हू नामे छुं देवी अंबाइ। क्षेत्रपाल छे माहारा सखाइ ॥ ३ ॥ नेमचरणे वसु हु सदाइ ॥ इह साधर्मी रत्न मुज थाई ॥ संघ पति राख्यो ते अबुझ, होय शक्ति तो अमशुं जुझ ॥४॥ तव प्रेत घणुं थरहरियो ॥ जुध मांडो ते कोपे भरियो ॥ चरण झालो उंधे मस्तक धरिओ ॥ शिला साथे आफलवा करीओ ॥ ५ ॥ इतले सो संवरी माया ॥ सोवन सम झलकंतीरे काया ॥ आभरणे संपरो हेव ॥ थयो प्रगट विमानिक देव ॥६॥ संघ पति सिर उपर ताम ॥ पुष्प वृष्टि करे अभिराम ॥ कहे धन धन तुं विविहारी ॥ धन २ तुम

Aho ! Shrutgyanam

सुतने नारि ॥ ७ ॥ गुरु मुखे ते लीधुं छे नीम ॥ मरणांतिक लगे करि सीम ॥ खमि न सक्यो ते पर सीध ॥ तुज परिक्षा ए मे कोध ॥८॥ तुं तो छे सुधो समकित धारी ॥ तें तो दुर गति दुर निवारी ॥ भलुं चित राख्युं निज ठाम ॥ तुने त्रुठा नेमी सर शाम ॥ ९ ॥ धन २ ए ताहेरि कलत्र ॥ पुन्य वंत एह ताहारो पुत्र ॥ धन धन ते देवी अंबाई । जेणे स्वामीनी भगति निवाइ ॥ १० ॥ जोहु जुध करु मन शुधे ॥ तोहे कुण नवि चाले बुधे ॥ पण क्रीडा मात्रज कीधुं ॥ तुज साहस पारखुं लिधुं ॥११॥ मणि मोतीनी वृष्टि उदार ॥ संघपति उपरे करे सार ! संघ माहे मुकौ तेणि वार ॥ वरता सघले जय २ कार ॥

॥ ढाल ११ मी ॥

(चाल पूर्वली) काज सिद्ध सकल हवे सार ए देशी) सो देव सुर लोके सधावे ॥ अंबांदिक निज ठामे आवे ॥ संघ सहू रेवत गिरि पावे ॥ सोवन फुल

Aho ! Shrutgyanam

मोति वधावे ॥ १ ॥ मन सुद्धशु भावना भावे ॥
उपकरण तलाटियें ठावे ॥ जिन जोवाने उछक
थावे ॥ नेम भेटीने पाप समावे ॥ २ ॥ धोती पेहेरे
थइ नीर्मल अंग ॥ स्नात्र करवाने थया सुचंग ॥
आवे मुल गंभारा माहे ॥ स्नात्र करे जल प्रवर
प्रवाहे ॥ ३ ॥ संघमां नहि श्रावकनो पार ॥ तेणे
व्यापी पाणी धार ॥ तोहां कणे अचंभम होय ॥
लेपमय बिंब गलियुं सोय ॥ ४ ॥ संघ सहू तब हुवो
विछिन ॥ खेद धरे घणुं संघवि रत्न । धिग मैं
असातना कीधी अजाण॥ तीरथ कियो भंस ए ठाण
॥५॥ आरोगीस हवे तो जल अन्न, जो ठामे स्था-
पिश बिंब रत्न ॥ मन सुधे एम आखडि किधि ।
संघ भलामण भाइने दीधि ॥ ६ ॥ अवर अध्यातम
सघलो छांडे ॥ आपण तप करवाने मांडे ॥
साठ हुवा उपवास जिवारे ॥ अंबाइ आव्यां प्रतक्ष
तिवारे ॥ ७ ॥ कंचन बलाणिक नामे सुचंग ॥
जक्षू निर्मित प्रासाद उतंग ॥तिहां संघवीने अंबा हि
आवे ॥ जिनवर बिंबते सघला देखावे ॥ ८ ॥ श्री
नेमिनाथ यदा विद्यमान ॥ कृष्ण निर्मित बिंब

Aho ! Shrutgyanam

प्रधान ॥ कंचन बलाणिक प्रासादमांहे ॥ ते सत्रि वंध्या हरखे रत्न साहे ॥ ९ ॥ सोवन रत्न रूप्य मणिकेरा । बिंब अढार २ भलेरा ॥ बाहातेर बिंबमां तुज रुचे जेह ॥ कहे अंबाइ सुखे लहो तेह ॥१०॥ रयणनुं बिंब लेवा मति कीधी ॥ आपणा नामने करवा प्रसिधि ॥ शिष्य सुमति तव दिए अंबाइ ॥ आगल कलियुग आवशे भाइ ॥ ११ ॥ लोक होसे अति लोभि विषमा । ते आगल लइ जासे पडिमा ॥ पाषाण बिंब लिओ ते माटे ॥ कहे संघवी किम आवशे वाटे ॥ १२ ॥ काचे तांतणे त्रिटी वलावो ॥ मारगे मुरती एणीपरे ल्यावो ॥ पुंठे म जोसो ने जो करशो विलंब ॥ तिहांकणे रेहस्ये ते निश्चल बिंब ॥ १३ ॥ एम सीखामण चित्त धरइ ॥ श्याम पाषाण तणो बिंब लेइ ॥ केटलिक भोमिका मेलीने आवे ॥ संघवी मनमे तब विस्मय थावे ॥१४॥ आवे के ना वे ए वाट विचाले ॥ एम त्रिमासी तव पाछुं निहाले ॥ रह्यो स्थिर बिंब आघो नवि हाले ॥ प्रासाद रचना तिहां कणे चाले ॥ १५ ॥ सुंदर श्री जिन भुवन कराव्यो ॥ संघ

Aho ! Shrutgyanam

चतुर्विध ने मन भाव्यो ॥ आज लगे तिणे ठामे पु-
जाये दरिशण दिठे दुरित पलाए ॥ १६ ॥ वस्तु ॥
रतन श्रावक रतन सरिखो जोइए ॥ पुरग प्रतिज्ञा
जेने करि ॥ सकल देव पारखे पोहोतो ॥ माताए
सारज करि ॥ संघ माहे स्थाप्यो सम्होतो ॥ वर
प्रसाद कराविओ ए श्री गिरनार उद्धार ॥ नेमि
जिणेसर स्थापिया वरता जै जै कार ॥ १ ॥

—⟶※⟵—

ढाल १२ मो.

(कलशनी)

एम प्रथम उधारज किधो ॥ भरते त्रिभुवन
जस लीधो ॥ एहि चाल छे ॥ पुरि प्रतिज्ञा तिणे एम
सुधां सांचव्यां तिणे नेम ॥ धन्य २ सतत्रादि शिम
॥ वावरयां जिणे सुवर्ण हिम ॥ १ ॥ जाचकना वं-
छित पूरां । दालिद्र ते दुखियानां चूरां ॥ तीरथनी
थापना कीधी ॥ किरति व्यापी सघले प्रसिध्धि ॥२॥
वलतां सौ संघ चलाव्या ॥ शेत्रुंजानि जात्राये आ-
व्या ॥ प्रभु आदि जिनेसर वंदा ॥ पातिक सर्वे

Aho ! Shrutgyanam

दूर निकंदा ॥ ३॥ विविधपरे द्रव्य ते चींवां ॥ सु-
क्रित तणां तरु सर्वे सीचां ॥ तीरथ अवर वर अनेक
बंध्या धरी तेणे सविवेक ॥४॥ अरथ अपूरव सरा।
पछे आपणे नगरे पधारा ॥ साप्रिये चढि आव्या
राजा ॥ बहूत मान दिये ते दिवाजा ॥ ५ ॥ घर
२ मंगल गावे वृधि ॥ कुशल कल्याण तणोरे समृद्धि
॥ सामि वछल बहुला कीधां ॥ पुन्य भंडार भरां ते
प्रसिधां ॥ ६ ॥ रतन सरिखो ए छे रतन धर्म तणो
करे ते जत्न ॥ चंद्र सुरज लगे नाम ॥ जेणे राख्युं
ते अभिराम ॥ ७ ॥ तिरथ एह श्री गिरिनार ॥
प्रगटी कीधो श्रावक रतने सार ॥ थापो श्री नेमि-
जीनी मुर्ति ॥ आज लगे एहवि छे किर्ति ॥ ८ ॥
अथिर लक्ष्मी छे एह ॥ पामि वय करजो ससने ; ॥
कृपणपणु नवि ते आणे ॥ तेहनो जस जगमांहे
जाणे ॥ ९ ॥ भरतादिक हुवा संघवी ॥ आज नहि
रिधि छे एहवि ॥ पाम्या सारु द्रव्य शक्तिए ववा ॥
तेहनी एम भावना भावो ॥ १० ॥ श्री शत्रुंजय
गिरि सार । भरतनो प्रथम उद्धार ॥ पांच पांडव
लगे जोई । सो पण गिरनार होई ॥ ११ ॥

Aho ! Shrutgyanam

महातम श्री शेत्रुंजा मांहे । एवुं दीसे छे प्राये ॥ रत्न श्रावक अधिकार ॥ जीरण प्रबंधे छे सार ॥ १२ ॥ श्री जीनशासन ए दीपक ॥ हूवा कलीकाले अलिझीपक ॥ श्रावक छे अवर अनेक ॥ कुण कहि जाणे ते छेक ॥ १३ ॥ सिद्धराज जेसंघ दे मेतो ॥ साजन मंत्री गह गहतो ॥ सारि सोरठनी जे कमाइ ॥ बार वर्ष सुधी जे निपाइ ॥१४॥ ते धन श्री गिरनारे वरियो ॥ श्री नेमि प्रासाद उधरियो ॥ सिधराजे तेणे वखाणो ॥ सचराचर जस ते जाणो ॥ १५ ॥ एवा वस्तुपाल तेजपाल ॥ मंत्री मुगट ते क्रिपाल ॥ श्री जैनधर्म दिपाव्या ॥ खट दर्शनने मन भाव्या ॥ १६ ॥ श्री सिद्धाचल गिरिवर ॥ कोटि अढार ते उपर ॥ बाणु लक्ष ते प्रसिद्ध ॥ एटलो ते द्रव्य वय कीध ॥ १७ ॥ श्री गिरनारे एम बार ॥ कोड एसी लाख सार ॥ अर्बुद लूणग वसही ॥ बार कोड त्रेपन लाख कही ॥ १८ ॥ एकसो चोत्रीसि चंग ॥ श्री जिन प्रसाद उतंग ॥ दोय सहस त्रणसें सार ॥ कीधा तेणे जीर्ण

Aho ! Shrutgyanam

उद्धार ॥ सत नव चोरासि विशाल ॥ किधि तेणे पोखधशाल ॥ कोटि अढार धन वाव्या ॥ जैन भं-डार लखाव्या ॥ २० ॥ दंतमय दीपता उंच ॥ सिंहासन ते सत पंच ॥ जादरमय समवसरण ॥ पांचसे पांच शुभ कर्ण ॥ २१ ॥ सवा लक्ष बिंब भराव्या । सुरि पद एक वीश थपाव्या ॥ स्वामि व-छल वरिसे बार ॥ संघ पूजा ते त्रणवार ॥ २२ ॥ शिवालय त्रैणशे दोय ॥ सासे ब्रह्मशाला जोय । कपालिक मठ एता । सेहस जोगि तिहां जमता ॥ २३ ॥ शत्रागार सय सात ॥ गउ सेहस दान विख्यात ॥ विद्या मठ सत पंच ॥ शातसे कुप करा संच ॥ २४ ॥ चारसे चोसठ वापि ॥ ब्रह्म पूरि तीहां सत आपि ॥ सरोवर चोरासी प्रमाण ॥ बत्रीस दुर्ग पाखाण ॥ २५ ॥ शेत्रुंजे शाडि बार जात्र ॥ पोख्या अनेक जन पात्र ॥ तेरमि वारे ए मार्गे ॥ वछ पाल ते पोता स्वर्गे ॥ २६ ॥ केतां मित्थ्यात्वि नाकाम ॥ कीधां राखवा एणे नाम ॥ अवसर्पणीए वखाण्या ॥ जेहवा प्रबंधे जाण्या ॥ २७ ॥ सवी धनर वय संख्या जोडि ॥ चौद लाख तेत्रीसे क्रोडी

Aho ! Shrutgyanam

॥ सहस अढासय आठ ॥ हु लोढी उणो ए पाठ ॥ २८ ॥ श्री पर्वत दक्षिणे जाण ॥ प्रभास पछमे वखाण ॥ उत्तरे केदारह कैये ॥ पूरवइ वाह्या रसी लइए ॥ २९ ॥ इण दीसे दान जगीशे ॥ किरति वीसतरी चिहू दीसे ॥ खट दर्शन कल्प-वृक्ष, पाम्यो बिरुद ते परतक्ष ॥ ३० ॥ वर्ष अढारमां प्रसिद्ध ॥ ए करणि करी सांव सिद्ध ॥ ते विद्यमान केहवाए ॥ आज लगि किर्ति बोलाए ॥ ३१ ॥ श्री रत्नाकरसूरी, उपदेश थया पून्य पुरि ॥ सा पेथड सुविचार ॥ बाणुं ते जैन विहार। शेत्रुंजे आदि जिन भुवने ॥ घटिका एकवीश सुवने ॥ विद्दविराख्यु एम नाम ॥ आ ससि सुरज जाम ॥ ३३ ॥ तस सुत झाझण सार ॥ सोवन धजा गिर नार ॥ नेमि प्रासाद करावि ॥ श्री सिद्धाचल थकी आवि ॥ ३४ ॥ श्री जयतिलक सुरेंद जस । उपदेशे आनंद ॥ श्रीश्रीमालि विभुषण ॥ हरपति साह वि-चक्षण ॥३' ॥ विक्रमरायथि वरशें ई ॥ चौदशे ओ-गण पचाशे । रेवत प्रासादे नेम ॥ उधरियो अति

Aho ! Shrutgyanam

प्रेम ॥ ३६ ॥ इम महा भाग्य अनेक ॥ श्रावक ते सकल विवेक ॥ किया गिरिनारे उधार ॥ कुण कहि जाणे तस पार ॥

॥ कलश ॥

(राग धन्यासरी) त्रुठो त्रुठोरे मुने साहेब जगनो त्रुठो जगदिश मलो जगदिश मलोरे ॥ ए टेक.)

श्री गिरनार विभुषण स्वामि ॥ जादव कुल शणगारजी ॥ राजुलवर रंगे जइ वंदु ॥ निरुपम नेमकुमारजी ॥ ज० १ ॥ अम आंगण सुरतरु फलीयोरे ॥ ज० ॥ श्री यदुवंश विभुषण मोहन ॥ समुद्र विजय धनतातजी ॥ धन्य शिवा देवी माता जेणे जायो ॥ जिनजी जगत विख्यातजी ॥ज० २॥ अंबड संभड दोये भाइ ॥ सुत साथे अंबाइजी ॥ श्री नेमिनाथ पद पंकज भमरी ॥ पूजो परम सखाइजो ३ ॥ आरती कष्ट हरो सा देवी ॥ श्री संघ वंछित पूरोजी ॥ चिंतित सिद्धि करो वलि सुरवर ॥ सिध वणायक सूरोजी ॥ ज० ४ ॥ आज अपूरव दिवस

Aho ! Shrutgyanam

हूवो मुझ ॥ पातिक दूर पुलायाजी ॥ श्री नेमिनाथ निरखा जवनयणे ॥ मनवांछित फल पायारे ॥ज ५ ॥ श्री धन रत्न सुरिंदगणाधिर ॥ वड तपगच्छ शिणगारजो ॥ अमर रत्न सुरिपाट प्रभावक ॥ श्री देव रत्न गणधारजो ॥ ज० ६ ॥ पंडित शिरोमणि भानुमेरु गणि ॥ सुगुरुपसाय आनंदजी ॥ श्री दधि गाम माहे दुखभंजन ॥ विनव्यो नेमि जिणंदजी ॥ ज ७ ॥ करो कृपा नय सुंदर उपर ॥ दियो प्रभु शिवपुर साथजो । हो जो सदा संघने सुखदायक ॥ सुप्रसन्न श्रीनेमिनाथजी ॥८ ज०॥

कलश ॥ एम रेवता चल जात्रानुं फल ॥ किंपि तस महिमा भण्यो ॥ बाविसमो बलवंत स्वामी ॥ नेमनायक संथुण्यो ॥ श्री भानुमेरु गणिंदु सेवक ॥ कहे नयसुंदर सदा ॥ शुविसाल देव दयाल अविचल ॥ आपो सुख मंगल मुदा ॥ १ ॥ इति श्री ॥

॥ गिरिनार उद्धार संपूर्ण छे ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ काश्मीर ॥

काश्मीर वा जम्मु । रावी और सिन्धु नदी के बीचका इलाका शुरुसे आखीर तक काश्मीरकी राजधानी कहलाती है । युगकी आदिमे श्री युगादि देवने अपने दीक्षा समयको निकट आया जानकर अपने सौ पुत्रोंको जो जो राज्य दिये थे उनमे यह भी एकथा. तदनंतर चौथे तीर्थंकर श्री अभिनंदन स्वामीके शासनमे जितारि राजाने इसी देशसे श्री सिद्धाचल जीकी यात्रा के लिये संघ निकाला था. श्री नगर जो कि काश्मीरकी जम्मु के समान राजधानी कहलाती है उससे थोडी दूरीपर "मस्ठ साहिब" नामक एक प्राचीन तीर्थ स्थानमे आज तक भी आर्हद् चैत्योंके चिन्ह सुने जाते है [इस बातकी सम्मता के लिये-स्वर्गस्थ-श्रीयुत्-राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द कालिखा "भूगोल हस्तामलक" देखो] इन स्थानोको लोग कौरव पाण्डवोंके समय के बने हुए कहते हैं । जिस महा पुरुषका नामनिर्देश प्रस्तुत रासमे किया गया है वह

Aho ! Shrutgyanam

भी इसीही काश्मीर देशका रहनेवाला था, और इस के सत्तासमयमे वहां जैनधर्म बडे प्राबल्यमे था. आज भी शहर जम्मुमे एक जैन मंदिर और कितनेक जैन श्वेताम्बर मूर्त्तिपूजकोंके घर है। जैन श्वेताम्बर साधुओंकी चतुर्मास स्थिति भी होती है। हां मूर्त्ति पूजकोकी अपेक्षा साधमार्गी जैन जिनको लोग ढूढियोंके नामसे जानते पहचानते है उनकी वस्ति जम्मुमे ज्यादा है सो उसमे सबब सिर्फ यह ही है कि कितनेक अरसेसे अपने लोगोका उधर विचरना बंद हो गया है और ढूंढिये लोगोंका अकसर फिरना रहता है।

Aho ! Shrutgyanam

संक्षिप्तसार-रास-गिरनार.

पहले जिसका संक्षिप्त वर्णन लिखा जा चुका है, ऐसे उस काश्मीर देशके " नवफुल्ल " नामक गाममे नवहंस नामा राजाथा जोकि देवी नामक राज कन्यासे व्याहा हुआ था. नवहंस नृपति के पाटनगर नवफुल्लमे पूर्णचंद्र शाहुकार रहता था जो-कि-सौभाग्यादि गुणोका आकर होकर भी उत्कृष्ट सदाचारी था।

जिनधर्मका आराधन करते हुए कल्पतरु के प्रिय फलोंके समान-रतन १ मदन २ और पूर्णसिंह यह तीन लडके उसके सर्व मनोरथोंको पूरण कर-नेवाले पैदा हुए, इस लिये पूर्णचंद्र श्रेष्ठि निश्चिन्त रहकर अपनी जीवन चर्याको व्यतीत करता था एक समय का जिकर है कि महादेव नामक एक सूरि सपरिवार उस नगरके किसी विशाल और रमणीय आराम खंडमे आकर समवसरे।

Aho ! Shrutgyanam

यह जिकर उस समयका लिखा जाता है कि जब बावीसमे तीर्थंकर श्रीमान् नेमिनाथ स्वामीके निर्वाणको सिर्फ चारहजार वर्षही बीतेथे।

देवताओके बनाये सोनेके कमलपर यतियोके प्रभु ज्ञानी देव विराजमान हुए वनपालने जाकर राजाको वधाया, राजाने सकल राजकीय मंडलको सूचना दी, तमाम नागरिक लोगोकोभी समाचार पहुंचाया।

विविध यान, विविध, वाहन चित्र विचित्र ऋद्धि परिवार सहित चारही वर्णकी जनता सूरि शेखरकी सेवामे जा पहुंची।

आनंदके अपूर्व आवेशसे लोगोने उस विश्वोपकारी मुनिपतिको भक्ति भाव पूर्वक वंदन किया। धर्मलाभ रूप आशीर्वाद पाकर राजासे लेकर सामान्य व्यक्ति पर्यंत सब लोग यथायोग्य स्थानपर बैठे। पूर्णचंद्रके तीनही पुत्र श्रद्धारागमे रक्त थे, देव गुरुसेवा तो उनका मुख्य कार्यक्षेत्र था. राजाके साथ वहभी बगीचेमे पहुंचे और चंद्र दर्शनसे चकोर-

Aho ! Shrutgyanam

की तरह हर्षको प्राप्त हुए। धर्म देशनाका आरंभ हुआ जिन वचन सामान्य वक्ताकी जुबानसे निकले हुएभी श्रोताके हृदयको विमलता पहुंचाते है तो भला देव देवेन्द्र वंदित अतिशय ज्ञानीकी धर्म देशनाका तो कहनाही क्या था !!!

धन्वंतरी–लुकमान आदि पूर्वकालीन वैद्य हकीमोमे और आजके ठोक पीटकर वैद्यराज जैसे नीम हकीमोमे अंतरही क्या? अंतर फक्त इतनाही है कि वोह निदान पूर्वक चिकित्सा किया करते थे और आज कालके बिचारे कितनेक नामधारी वैद्य कि जिनको अपने मतलबसेही काम है उनमे वह गुण नही पाया जाता इसीही लिये उनपर मनुष्यको आस्था नही जमती। जब आस्थाही नहीतो रोगाभाव कहांसे ?

पूर्वकालके ज्ञानी गुरु मानिंद धन्वंतरीके थे। धर्मदेशनामे अनेक विषयोंकी व्याख्या करते हुए ज्ञानी महाराजने प्रसंग पाकर कहा–लोकनाथ तीर्थंकर देव जगतके परम उपकारी है, इस वास्ते उनके निर्वाण जानेके पीछे भी उनके उपकारको स-

Aho ! Shrutgyanam

रणमे लाकर उनको प्रतिमाएँ अर्थात् बिम्ब बनाकर पूजे जाते हैं, शास्त्र नीतिसे जिनप्रतिमाएँ जिनके समानही मानी जाती हैं, और पूजी जाती हैं. मिसरी जहां खाइ जायगी वहांही मीठी लगेगी, प्रभु पूजन जिस जगह किया जावेगा वहांही फलदायक होगा. तथापि शत्रुंजय गिरनार ऊपर की हुई पूजा अथवा दानादि अन्य सर्व क्रियाएँ भव्यात्माओंको अन्यक्षेत्रकी अपेक्षा अनंत फलके देनेवाली होती है। श्री शत्रुंजय महातीर्थकी पांचवी टूंक का नाम "रैवताचल" है, और उसका प्रसिद्ध नाम गिरनार है, गिरनार तीर्थपर श्री नेमिकुमार के ३ कल्याणक हो चुके है, इस लिये यह तीर्थ विशेष पूजा स्थान माना गया है, जैनशास्त्रोंके अतिरिक्त अन्य शास्त्रोंमें भी गिरनार तीर्थका प्रभावशाली वर्णन है, जैसे कि प्रभास पुराणमे ऋषियोंका कथन है कि–

" पद्मासनसमासीनः श्याममूर्त्तिर्दिगंबरः ।
" नेमिनाथः शिवेत्याख्या, नाम चक्रेऽस्य वामनः ।
" कलिकाले महाघोरे, सर्वकल्मष नाशनः ॥
" दर्शनात्स्पर्शनादेव, कोटियज्ञफलप्रदः ॥

Aho ! Shrutgyanam

" तस्मायेनशिवासूनु-रुज्जयन्तेनमस्कृतः ।
" तेन श्रद्धावतानून-मुपयेमे शिवेंदिरा ॥

अर्थ-पद्मासनसे विराजित-श्याममूर्त्ति-दिशाही है वस्त्र जिसके-शिवाराणीके पुत्र होनेसे जो शिव कहलाते है-अथवा-वामनावतार विश्नुने जिनको शिव नामसे बुलाया है, जो-महाघोर कलियुगमे सर्वपापोका नाश करनेवाले है । उनके दर्शनसे-चरणस्पर्शनसे कोटियज्ञ जितना फल प्राप्त होता है.

इस लिये जिस पुण्यात्माने गिरनार तीर्थपर श्री नेमिनाथ प्रभुको वंदन नमस्कार किया, उस श्रद्धालुने निश्चय मुक्ति वनिताकी वरमाला पहनली ! ! !

इस बातको सुनकर परम श्रद्धालु रत्न श्रावकको तीर्थाधिराजपर अपूर्व भक्ति भाव जागा । उसने सभा-समक्ष खडे होकर प्रतिज्ञाकीकि गुरु महाराजके मुखसे जिस तीर्थ राजकी प्रशंसा सुनी है चतुर्विध-संघ सहित ६ री पालता हुआ उस तीर्थकी यात्रा करुं तबही मै दूसरी विगय खाउंगा.

Aho ! Shrutgyanam

जहां तक गिरनार तीर्थके दर्शन न करुं वहां तक जिन प्रवचन प्रसिद्ध (६) ही विगयें मेसे सिर्फ १ ही विगयसे शरीर यात्रा चलाउंगा "।

बस रत्न तो सच्चा रत्न ही था वह तो कल्पान्त कालमे भी काच नही होनेवाला था, परंतु उसकी उस उत्कृष्ट प्रतिज्ञाको सुनकर राजा प्रमुख सब लोग घबरा उठे, पुरुष रत्न उस रत्नशाहके चेहरेपर चिन्ताका नाम निशानभी नहीं था, राजा और प्रजाके सर्व मनुष्योने शाहको अनेक तरह समझाया और कहा कि–आपका धार्मिक मनोरथ अच्छा है, उसमे हमबाधक नही है, परंतु सब काम विचार पूर्वक ही करना चाहिये। सोचो कि–कहां काश्मीर और कहां सोराष्ट्र ? ऐसी हालतमे पादविहार, एक वार सो भी रूक्ष भोजन, शरीर सुकुमालभला आप ऐसे घोर कष्टोको किसी भी तरह सहन कर सक्ते हैं ?

कार्य वह करना चाहिये कि–जिसमे अपनेको पछताना न पडे और लोगोको हांसी करनेका समय न मिले। रत्नशेठने पुछा कि फिर अब आप

Aho ! Shrutgyanam

मुझे क्या कहना चाहते है ? जनसमाजने कहा संघ निकालकर तीर्थ यात्रा करे उसमे हम खुश है और यथाशक्ति सहायता देनेको भी हरतरहसे त्यार है. परंतु विगय-त्याग संबंधी आपका अभिग्रह बिना विचारा है. इस हठकों आप छोडदें । रत्न शेठने कहा भला हाथी के दान्त बाहिर निकल कर फिर अंदर जाते है ? कभी नही । मेरा तो पक्का निश्चय यह ही है कि–

" कुछ भी नही जो छोडते है धैर्य आपत कालमे.
" सोत्साह हसते है पडे जो दुखके भी जालमें ।
" साहस नही घटता जिन्होका वह बडेही वीरहै,
" कृतकार्य होते है सदा संसारमें जो धीर है ॥

यह तो मेरा निखालिस धर्म मनोरथ है. जिस शुभ कामना का मैने अभिग्रह लिया है वह उभय लोक सुखा वहा तीर्थ यात्रा रूप प्रशस्य क्रिया है। कि–जिसका फलादेश वर्णन करते हुए अनंत ज्ञानियोंने " हियाए, सुहाए, खम्माए, निस्सेय साए आणुगामित्ताए भविस्सइ " ऐसा खुद अपने श्रीमु-

Aho ! Shrutgyanam

खसे वर्णित किया है परंतु कभी कोई सांसारिक न्याय नीतीसे संबंध रखनेवाला कार्य भी हो और उसका करना भी अगर मनुष्यने स्वीकार किया हुआ हो तो उससे भी पीछे हटना यह आर्य पुरुषकी मर्यादा नही है सुनो—

"दुख लाभ हो यां हानि हो अपकीर्ति चाहे हो भले,
"पत्थर गले पानी चले अचला चले विधि भी टले।
"हटते नहीं पर धीर प्रणसे प्राणके रहते कभी,
"मानी मनुज अपमानको जीते नही सहते कभी ॥

उस पुन्यवानके इस धैर्यको देखकर सकल जनसमाजने आशीर्वाद दिया. राजाने अपनी सेना दी और भी मार्गोचित सामग्री दी। सोनेकी परीक्षा अग्निमे होती है, संघपति आनंदपूर्वक श्री संघको और अपने धर्मोपदेशक गुरूको साथ लेकर अविछिन्न प्रयाणोंसे तीर्थ राजके सन्मुख चले जा रहे है. इतनेमें विकराल रूपवाला एक राक्षस उनको मिलता है, सर्व लोग भय भीत होकर इधर उधर भागनेकी तयारी करते है, सुभट लोग भी

Aho ! Shrutgyanam

हारे है उसवक्त धीरज धारण करके रत्नसंघवी उसे पूछता है कि तुम क्यों विघ्न करते हो? तुमको चाहिये क्या? राक्षस कहता है मुझे अत्यन्त भूख लगी है, मुझे एक मनुष्य दो, उसे खाकर सबको छोड दुं। नही तो सबको मारडालुंगा। उसके इस वचनकों सुनकर खुशी मनाता हुआ संघवी अपने प्राणोंका बलिदान करके अखिल लोगोंको बचानेका विचार करता हुआ राक्षसके सामने जानेकी तयारी करता है. जीवितकी आशा छोडकर सर्व जीवोंको खमाता है। उसवक्त एकान्त पतिव्रता रत्न शेठकी पत्नि अपने पतिका हाथ पकडकर पीछे हटाती हुई उस राक्षसको अपने प्राण देनेके लिये आगे बढती है। सुविनीत मातृ पितृ भक्त उनका लडका दोनोको रोककर आप उस राक्षसका भोग बनना चाहता है। परंतु संघवी उनको यथा तथा समझाकर वहां जाता है, इधर पोमिनी और कोमल उनके कुशलके वास्ते कायोत्सर्ग करते हैं "धर्मात् किं किं न सिध्यति? मां बेटे के ध्यान बलसे गिरनार तीर्थ कांपता है, अंबिका माता संघवीको कष्टमे पडे देखकर सा-

Aho ! Shrutgyanam

त क्षेत्रपालोंको लेकर वहां आती है।

राक्षसके साथ उनका समर होनेके बाद वह राक्षस अपने असली दिव्य रूपको प्रकट करके संघवीको वरप्रदान करके स्वस्थानपर जाता है, और संघवी गिरनार तीर्थपर पहुंचता है, इस घटनाका उल्लेख समकित सित्तरीकी टीकाके छठे प्रकरणमें आचार्य श्री 'संघतिलक' सूरिजीने बडे हीमनोहर ढब से लिखा है। नीचे जिस घटनाका जिकर है वह और भी हृदय द्रावक है। सारांश उसका यह है कि जब संघ तीर्थपर पहुंचा तो सबने प्रभुदर्शन करके पूजा सेवाका लाभ लेकर जन्म पवित्र किया, और अनेकानेक खुशियां मनाई। एक दिन गजपद कुंडके जलमे सबने स्नान किया और प्रभुका भी प्रक्षाल उसीही जलसे कराया। हमेशां ऐसा होताही था परंतु " भवितव्यं भवत्येव " जलके प्रवाहमे लेपमयी प्रतिमा गल गई। संघमे हाहाकार मच गया सब लोग शोकसागरमे डूब गये। संघवीने धैर्य पकडकर दोनो भाइयोको कहा तुम उतने दिन तक श्री

Aho ! Shrutgyanam

संघकी सेवा करो जितने दिन मैं तप करुं। यहकहकर संघवीने तपस्या करनी प्रारंभ की। साठवें दिन अंबिका माताने स्वयं दर्शन देकर उनको कितनीही अपूर्व प्रतिमाओके दर्शन कराए और उनमेसे एक प्रतिमा चैत्यमे स्थापन करनेके लिये दी और कहा इस प्रतिमाजीकों वाहनमे बैठा कर काचे तंतुओसे खींचकर लेजाना परंतु पीछे मुडकर न देखना.

दैवयोग कितनेक मार्गको तह करके संघवीने पीछे देखा प्रतिमाजी वहांही ठहर गये।

अस्तु शासनदेवकी ऐसीही कामना थी। संघवीने अपने असंख्य धनको खर्च कर वहांही चैत्य तयार कराया. और प्रभु प्रतिमाको प्रतिष्ठा करवाई। अनेक उत्सव महोत्सवोंको करते हुए संघवीजी कितनेक दिन वहां ठहरे और वहांसे चलकर ज्ञानी गुरु महाराजके साथ श्री सिद्धाचल पर आये. आनंद पूर्वक शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा करके संघवी संघ सहित अपने नगरमे चले आये और महादेव सूरिजी भव्यजनोके उपकारके वास्ते अन्यत्र विहार

Aho ! Shrutgyanam

कर जिनशासनका आलोक करते हुए तप संयमसे पूर्वकी तरह अपने शेष जीवनको सार्थक और सफल रूपसे व्यतीत करने लगे ।

॥ ओम् शान्तिः ॥

॥ गिरनार मंडन श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

तोटक छंद.

जयवंत महंत निरंजन छो, भवना दुख दोहग भंजन छो ॥ भविनेत्र विकासन अंजन छो, प्रभु काम विकार निगंजन छो. ॥ १ ॥ जगनाथ अनाथ सनाथ करोः मम पाप अमाप समूल हरो ॥ अरजी उर नेमि जिणंद धरो, तुम सेवक छुं प्रभु ना विसरो. ॥ २ ॥ सुर अर्चित वांछित दायक छो, सउ संघ तणा प्रभु नायक छो ॥ गिरनार । तणा गुण गायक छो; कलहंस तणी गति लायक छो. ॥१॥

॥ श्री गिरनार मंडण नेमिनाथ स्तवन. ॥

पुनम चांदनी आजेखीली रहीरे ॥ ए चाल ।

नमीये नेहथी आजे नेमिनाथरे, सज्जन समजो

Aho ! Shrutgyanam

नमस्कार तणुं फळ सार. जईने गिरनार गिरिपर तेडी सउ साथनेरे. ॥ ए आंकणी ॥ नाथ नाथ नेमिनाथने, वंदनकरवाकाज; गगन मार्गथी आवीया, बेसीने गजराज. गज पद कुंड कर्यो गजपगथी काढी पाथनेरे ॥ नमीए. ॥ १ ॥ सरस्वती रसवती नहीं गंगारंगाय, साकर पण कांकर सभी, तस जल आगे थाय. सुरपति स्नात्र करे एवा जलथी गाई गाथनेरे ॥ नमीए ॥ २ ॥

शिवादेवी सुत नेमजि, दया तणा भंडार; सहज आत्म तेजेकरी, शोभेअपरंपार. काढे तमो मग्न उद्विग्नने भींडी बाथनेरे ॥ नमीये. ॥३॥ ध्यान ध्वंस करे नाथनुं, कर्मरोग तत्काल. अनाहत नादे करी, नहोय वांको वाल. ते कारण योगी कदी न पीये कवाथनेरे ॥ नमीये० ॥४॥ संसार सागर मांही छे, मोहावर्त महान्; संसारी सारी तिहां, डुबी रही छे जहान. तारे हंसपरे प्रभु तरतज पकडी हाथनेरे ॥ नमीये. ॥ ५ ॥

समाप्त.

Aho ! Shrutgyanam